समाचार पत्रिका

भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र

जनवरी-जून २०२५

सामग्री

- निदेशक की कलम से
- अनुसंधान उपलब्धियाँ
- आयोजित कार्यक्रम
  - प्रशिक्षण कार्यक्रम
  - राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ / कार्यशालाएँ
- प्रसार गतिविधियाँ
  - ✓ प्रशिक्षण
  - ✓ कृषि प्रदर्शनियाँ / मेले
- प्रौद्योगिकी हस्तांतरण / समझौता ज्ञापन
- विशिष्ट आगंतुक
- किसान एवं छात्र आगंतुक
- कार्मिक
  - ✓ पुरस्कार
  - ✓ पदोन्नतियाँ
  - ✓ प्रकाशन
  - ✓ स्वीकृत नई परियोजनाएँ
  - ✓ सम्मेलनों / बैठकों में सहभागिता
  - ✓ नियुक्ति / पदभार ग्रहण

निदेशक की कलम से

प्रिय पाठकों,

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मैं भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर की उपलब्धियाँ आपके साथ साझा कर रहा हूँ। विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत हमारे वैज्ञानिकों ने ३६० गांवों में १५ दिन किसानों के साथ मिलकर सक्रिय संवाद किया और उनकी वास्तविक कृषि समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया। इन संवादों ने न केवल तत्काल व्यावहारिक समाधान प्रदान किए, बल्कि ऐसे महत्वपूर्ण अनुसंधान क्षेत्रों की पहचान भी की, जो हमारे भविष्य के वैज्ञानिक अनुसंधानों को मार्गदर्शन देंगे।

अनार की मूल्य श्रृंखला को और सुदृढ़ करने के उद्देश्य से, रा. अना. अनु. के. ने दिल्ली में हितधारकों की बैठक का आयोजन किया, जिसमें किसानों, शोधकर्ताओं और उद्योग प्रतिनिधियों को एक साथ लाया गया। इसके अलावा, हमने एक राष्ट्रीय सम्मेलन का सफल आयोजन किया, जिसमें शोधकर्ता, उद्योग विशेषज्ञ, किसान और छात्र सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कृषि उद्यमिता पर आयोजित कार्यशालाओं ने प्रतिभागियों को कृषि-आधारित व्यवसाय स्थापित करने और उसे सफलतापूर्वक बढ़ाने के लिए आवश्यक तकनीकी जानकारी दी गई।

एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि हमारे तकनीकी नवाचारों का सफल वाणिज्यिक हस्तांतरण निजी कंपनियों को किया गया। संस्थान ने अपनी पहुँच और दृश्यता बढ़ाने के लिए "रा.अना.अनु.कें. संक्षिप्त परिचय" वीडियो का हिंदी संस्करण विकसित और जारी किया। हमारे वैज्ञानिकों ने राष्ट्रीय प्रतिष्ठित पुरस्कारों के माध्यम से केंद्र का गौरव बढ़ाया, जो हमारे वैज्ञानिक समुदाय की उत्कृष्टता का प्रमाण है।

इसके अलावा, रा.अना.अनु.कें. की प्रदर्शनी, प्रशिक्षण कार्यक्रम और विस्तार गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निरंतर यह दर्शाती है कि हम नवाचार, किसान सशक्तिकरण और सतत कृषि विकास के प्रति प्रतिबद्ध हैं।

भविष्य की दिशा में, हम अपने प्रभाव को और गहरा करने, नवाचार को प्रोत्साहित करने और किसानों तथा कृषि उद्योग के लाभ के लिए अनार अनुसंधान में नई ऊँचाइयों को प्राप्त करने के लिए लगातार प्रयासरत रहेंगे।

निर्मित एवं प्रकाशन

डॉ. राजीव अरविंद मराठे, निदेशक
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र
केगांव, सोलापुर
फोन : ०२१७-२३५४३३०
ईमेल : nrcpomegranate@gmail.com

संकलन एवं संपादन

डॉ. पिंकी रायगोंड, वरिष्ठ वैज्ञानिक (पादप क्रिया विज्ञान)
डॉ. सोमनाथ एस. पोखरे, वरिष्ठ वैज्ञानिक (सूत्रकृमी विज्ञान)
डॉ. नम्रता ए. गिरी, वैज्ञानिक (खाद्य प्रौद्योगिकी)
डॉ. रंजन कुमार सिंह, प्रधान वैज्ञानिक (फल विज्ञान)
वेबपृष्ठ : https://www.nrcpomegranate.in

उच्च मूल्य बागवानी फसलों पर हितधारक बैठक (Stakeholder Meeting)

"उच्च मूल्य बागवानी फसलों के उत्पादन, मूल्य संवर्धन और निर्यात" पर हितधारक बैठक का सफल आयोजन भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर ने महात्मा गांधी ग्रामीण औद्योगिकीकरण संस्थान (म. गां. ग्रा. औ. सं.), वर्धा, महाराष्ट्र के सहयोग से २० मार्च २०२५ को किया। यह कार्यक्रम नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर में आयोजित हुआ और इसमें लगभग ५० उद्योग हितधारक शामिल थे, रोपण सामग्री आपूर्तिकर्ता/ नर्सरी संचालक, कृषि इनपुट व्यापारी, मूल्य संवर्धन विशेषज्ञ, विपणन पेशेवर और निर्यातक शामिल थे।

मुख्य अतिथि के रूप में भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली के डॉ. एस. के. सिंह, उप महानिदेशक (बागवानी विज्ञान), और सम्मानित अतिथि के रूप में डॉ. एस. एन. झा, उप महानिदेशक (कृषि अभियांत्रिकी), उपस्थित रहे। उद्घाटन सत्र का आरंभ भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर के निदेशक डॉ. राजीव अरविंद मराठे द्वारा स्वागत भाषण और उद्घाटन टिप्पणी से हुआ। इसके बाद म. गां. ग्रा. औ. सं., वर्धा के निदेशक डॉ. ए. ए. मुरकुटे ने उद्यमिता विकास पर प्रेरक भाषण दिया।

कार्यक्रम के दौरान, दो प्रगतिशील किसानों, श्री. भागवत उत्तम पवार और श्री. नानासो दादा गडदे को उनके सतत, अवशेष-रहित और निर्यात गुणवत्ता वाले अनार उत्पादन के लिए प्रतिष्ठित "अनार गौरव पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। साथ ही, यू-लिंक एग्रीटेक प्रा. लि. (आई एन आई फार्म्स) को भारतीय अनार को संयुक्त राज्य अमेरिका में सफल निर्यात के योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

तकनीकी सत्रों में उद्योग विशेषज्ञों ने बागवानी निर्यात से जुड़े ज्ञान और चुनौतियों पर विस्तृत चर्चा की, जिसका विवरण नीचे दिया गया है:

- तकनीकी सत्र-I की अध्यक्षता डॉ. वी. बी. पटेल, सहायक महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली और डॉ. सचिन सुरोसे, परियोजना समन्वयक, मधुमक्खियों एवं परागणकों पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना, नई दिल्ली ने की। प्रस्तुतियाँ डॉ. सुनील पारीख (एनआईएफटीईएम-के, हरियाणा), श्री. सुखदेव सिंह (फ़ूड फ़्रेशली, जर्मनी), श्री. अतुल वाबले (यू-लिंक एग्रीटेक, आई एन आई फार्म्स), श्री. प्रशांत इंदलकर (सैम एग्री, हैदराबाद) और श्री. करण सिन्हा (मान देशी फाउंडेशन, सातारा) द्वारा दी गई।
- तकनीकी सत्र-II की अध्यक्षता भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली के डॉ. सुधाकर पांडे और डॉ. के. नरसैया, सहायक महानिदेशक, ने की। इसमें निर्यात में आने वाली चुनौतियाँ, वस्तुओं की उपलब्धता और अनार के दानों की भंडारण अवधि बढ़ाने पर विस्तृत चर्चा हुई। प्रस्तुतियाँ डॉ. कौशिक बॅनर्जी, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-एन.आर.सी.जी., पुणे; डॉ. निलेश एन. गायकवाड, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर; डॉ. अपराजिता वर्धन, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी, म. गां. ग्रा. औ. सं., वर्धा; श्री. विनय पोळ, भारती ग्रीन टेक, सातारा; और श्रीमती स्वप्ना जराग, ग्रो इंडिया इंपोर्ट-एक्सपोर्ट, पुणे द्वारा दी गई।

यह हितधारक बैठक किसानों, वैज्ञानिकों, उद्योग प्रतिनिधियों और निर्यातकों के बीच महत्वपूर्ण संवाद को सशक्त बनाने में सफल रही और उच्च मूल्य बागवानी निर्यात में भविष्य सहयोग की दिशा तय करने में मदद करेगी। बैठक का आयोजन डॉ. राजीव अरविंद मराठे (संयोजक) और डॉ. ए. ए. मुरकुटे (सह-संयोजक) के नेतृत्व में किया गया, जबकि डॉ. निलेश गायकवाड और डॉ. नम्रता गिरी ने आयोजन सचिव और डॉ. सोमनाथ पोखरे एवं डॉ. नृपेन्द्र सिंह ने सह-आयोजन सचिव के रूप में योगदान दिया।

हितधारक बैठक के उद्घाटन कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित गणमान्य अतिथिगण एवं प्रतिभागी

डॉ. एस. के. सिंह, उप महानिदेशक (बागवानी विज्ञान), भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली द्वारा श्री. भागवत उत्तम पवार को 'अनार गौरव पुरस्कार' प्रदान कीया गया

डॉ. एस. एन. झा, उप महानिदेशक (कृषि अभियांत्रिकी), भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली द्वारा श्री नानासो दादा गडदे को 'अनार गौरव पुरस्कार' प्रदान कीया गया

हितधारक बैठक के तकनीकी सत्र के दौरान प्रतिभागी और समन्वयक

राष्ट्रीय सम्मेलन : ग्रामीण विकास हेतु नवाचार तकनीकें एवं उनका वाणिज्यिकीकरण

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर ने पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर एवं सिंहगड इंस्टिट्यूट, सोलापुर के संयुक्त तत्वावधान में "ग्रामीण विकास हेतु नवाचार तकनीकें एवं उनका वाणिज्यिकीकरण" विषय पर ३ से ५ मार्च, २०२५ के दौरान तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का सफल आयोजन किया।

सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में पद्मश्री डॉ. शिवम भोजे, पूर्व निदेशक, इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केंद्र, कलपक्कम (तमिलनाडु) ने मुख्य अतिथि के रूप में गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। इस अवसर पर मा. कुलपति प्रो. डॉ. पी. ए. महानवर (पीएएच सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर), डॉ. राजीव अरविंद मराठे, निदेशक (भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर) तथा मा. श्री संजय नवले, कैंपस निदेशक (सिंहगड इंस्टिट्यूट्स, सोलापुर) विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में देशभर से वैज्ञानिकों, शोधार्थियों एवं युवा पेशेवरों ने भाग लिया और अपने शोध कार्यों के पोस्टर एवं मौखिक प्रस्तुतिकरण दिए। इस अवसर पर भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर द्वारा संस्थान की तकनीकों की प्रदर्शनी भी आयोजित की गई, जिसे छात्रों, किसानों तथा शिक्षकों द्वारा उत्साहपूर्वक अवलोकित किया गया।

राष्ट्रीय सम्मेलन का सफल आयोजन डॉ. राजीव अरविंद मराठे (संयोजक), डॉ. निलेश एन. गायकवाड (सह-संयोजक), तथा डॉ. नम्रता ए. गिरी और डॉ. सोमनाथ एस. पोखरे (आयोजन समिति सदस्य) के नेतृत्व में किया गया।

राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह के दौरान मंच पर गणमान्य अतिथिगण

प्रो. पी. ए. महानवर, कुलपति, सोलापुर विश्वविद्यालय एवं निदेशक, राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र द्वारा प्रदर्शनी स्टॉल का अवलोकन

कार्यशाला : मूल्य संवर्धन एवं कौशल विकास के माध्यम से किसानों का सशक्तिकरण हेतु कृषि उद्यमिता

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर द्वारा "मूल्य संवर्धन एवं कौशल विकास के माध्यम से किसानों को सशक्तिकरण हेतु कृषि उद्यमिता" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन ४ मार्च, २०२५ को सिंहगड इंस्टिट्यूट, सोलापुर में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. एस. एच. पवार, अनुसंधान निदेशक, सीआरटीडी, सिंहगड इंस्टिट्यूट, सोलापुर तथा डॉ. राजीव अरविंद मराठे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर रहे। दोनों ने कृषि एवं प्रसंस्करण क्षेत्र में उद्यमिता और कौशल विकास के महत्व पर प्रेरक विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर डॉ. एस. डी. नवले, प्रोफेसर, एन. बी. एन. सिंहगड कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, सोलापुर ने "कृषि कौशल विकास के माध्यम से उद्यमिता विकास" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यशाला में १०० से अधिक किसानों और विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर तथा सिनामाई कर्जत एग्रो फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, मिरजगांव, अहिल्यानगर (महाराष्ट्र) के बीच उच्च गुणवत्ता वाले, निर्यात योग्य अनार उत्पादन हेतु तकनीकी सहयोग के लिए एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए।

निदेशक, रा. अ. अनु. के. द्वारा कार्यशाला का उद्घाटन

रा. अ. अनु. के. और सिनामाई कर्जत एग्रो एफ.पी.सी. लिमिटेड, मिरजगाँव, महाराष्ट्र के बीच समझौता पत्र (MoU) हस्ताक्षर

कार्यक्रम के अंतर्गत दो तकनीकी सत्र आयोजित किए गए —

- पहला सत्र "अनार एवं केले में मूल्य संवर्धन एवं कौशल विकास" विषय पर केंद्रित था, जिसका संचालन डॉ. के. दिनेश बाबू और डॉ. रंजन कुमार सिंह ने किया। इस सत्र में अनार और केले की गुणवत्ता उत्पादन, उद्यमिता विकास एवं प्रसंस्करण तकनीकों पर विशेषज्ञ व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। प्रमुख वक्ताओं में डॉ. निलेश एन. गायकवाड और डॉ. सोमनाथ पोखरे (भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर), डॉ. सुरेश पी. (भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय केला अनुसंधान केंद्र, तिरुचिरापल्ली) तथा डॉ. किरण जाधव (कृषि विज्ञान केंद्र, जलगांव) शामिल थे।
- दूसरा सत्र "मोटे अनाज, पुष्प एवं रेशम उद्योग में मूल्य संवर्धन एवं कौशल विकास" विषय पर आयोजित हुआ, जिसका संचालन डॉ. संग्राम धुमाल और डॉ. बस्वराज रायगोंड ने किया। इस सत्र में उद्यमिता विकास और प्रसंस्करण तकनीकों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। विशेषज्ञ वक्ताओं में डॉ. दिनेश क्षीरसागर (के.वी.के. मोहोल), डॉ. परशुराम पात्रोती (भा.कृ.अनु.प.–रबी ज्वार क्षेत्रीय केंद्र, सोलापुर), तथा डॉ. राहुल यादव एवं डॉ. गणेश कदम (भा.कृ.अनु.प.– पुष्पकृषि अनुसंधान निदेशालय, पुणे) शामिल थे।

दोनों सत्रों में विशेषज्ञों ने कृषि में मूल्य संवर्धन के अवसरों, कौशल विकास की आवश्यकता और ग्रामीण उद्यमिता के प्रसार पर व्यावहारिक एवं उपयोगी जानकारी दी। कार्यशाला का सफल आयोजन डॉ. राजीव अरविंद मराठे (संयोजक) के नेतृत्व में हुआ। डॉ. निलेश एन. गायकवाड और डॉ. नम्रता ए. गिरी ने आयोजन सचिव तथा डॉ. सोमनाथ एस. पोखरे ने सह-आयोजन सचिव के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विकसित कृषि संकल्प अभियान

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर के वैज्ञानिको ने “विकसित कृषि संकल्प अभियान (VKSA)–२०२५” में सक्रिय रूप से भाग लिया। यह एक राष्ट्रीय स्तर का *प्री-खरीफ अभियान* था, जिसका आयोजन कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय तथा भा.कृ.अनु.प. द्वारा २९ मई से १२ जून, २०२५ के दौरान पूरे देश में किया गया। इस अभियान का उद्देश्य देशभर के किसानों के मध्य आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकियों के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना था।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर के सभी वैज्ञानिकों ने इस प्रौद्योगिकी प्रसार कार्यक्रम में सक्रिय योगदान देते हुए महाराष्ट्र राज्य के पाँच कृषि विज्ञान केन्द्रों (केवीके) सोलापुर–I (शबरी प्रतिष्ठान केवीके), सोलापुर–II (केवीके, मोहोळ), धाराशिव (तुलजापुर केवीके), लातूर (केवीके) एवं नांदेड (केवीके) के सहयोग से किसानों के साथ संवाद स्थापित किया। वैज्ञानिक दलों ने संबंधित केवीके क्षेत्रों के विभिन्न गाँवों में जाकर किसानों को भा.कृ.अनु.प. के अंतर्गत विकसित नवीनतम कृषि एवं पशुपालन प्रौद्योगिकियों की जानकारी दी, विशेष रूप से भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर द्वारा विकसित तकनीकों के विषय में विस्तृत जानकारी साझा की गई। विशेषज्ञों ने किसानों को प्रमुख रोग एवं कीटों की पहचान तथा उनके समुचित प्रबंधन उपायों पर मार्गदर्शन दिया।

किसानों को यह भी अवगत कराया गया कि फसल की गुणवत्ता एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रमाणित नर्सरी से प्राप्त रोग-मुक्त पौध सामग्री का उपयोग अत्यंत आवश्यक है। इस अवसर पर केंद्र द्वारा प्रकाशित विविध पुस्तिकाएँ एवं दिशा-निर्देश किसानों में वितरित किए गए ताकि वैज्ञानिक ज्ञान की पहुँच अधिकाधिक किसानों तक हो सके।

निदेशक, राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र), सोलापुर ने कृषि विज्ञान केंद्र, नारायणगांव, पुणे में विकसित कृषि संकल्प अभियान बैठक में भाग लिया

विकसित कृषि संकल्प अभियान के दौरान विभिन्न गांवों के किसानों के साथ रा.अना.अनु.कें. के वैज्ञानिकों का संवाद

राजस्थान में अनार खरीदार–विक्रेता बैठक

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर के वैज्ञानिकों की टीम डॉ. रंजन कुमार सिंह, डॉ. संग्राम एस. धुमाळ, डॉ. सोमनाथ एस. पोखरे तथा डॉ. नम्रता ए. गिरी ने “खेत से अंतरराष्ट्रीय बाजार तक: राजस्थान राज्य हेतु अनार उत्पादन, प्रसंस्करण, निर्यात एवं विपणन प्रबंधन” विषय पर आयोजित दो दिवसीय *अनार खरीदार–विक्रेता बैठक* में भाग लिया।

यह कार्यक्रम ६–७ जनवरी, २०२५ को बालोतरा, राजस्थान में आयोजित किया गया, जिसका आयोजन *एपीडा, नई दिल्ली* द्वारा राज्य *कृषि विभाग, भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर, कृषि निर्यात सुविधा केन्द्र* तथा *राज्य कृषि विश्वविद्यालय* के सहयोग से किया गया था।

इस बैठक में लगभग ५० किसानों एवं ३० निर्यातकों ने सहभागिता की। डॉ. सोमनाथ एस. पोखरे ने “निर्यात गुणवत्ता वाले अनार उत्पादन” विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंतर्गत समीपवर्ती अनार बागानों का भ्रमण तथा किसानों के साथ *ऑन–फार्म* संवाद भी आयोजित किया गया, जिसमें उत्पादन एवं विपणन से संबंधित व्यवहारिक जानकारी साझा की गई।

खरीदार–विक्रेता बैठक का उद्घाटन

डॉ. संग्राम धुमाळ हितधारकों को संबोधित करते हुए

निर्यात गुणवत्ता अनार उत्पादन' विषय पर डॉ. सोमनाथ पोखरे, द्वारा व्याख्यान

रा. अ. अनु. कें., तकनीकों का प्रदर्शन और आगंतुकों के साथ संवाद

गुजरात में ‘अनार उत्कृष्टता केंद्र’ (Centre of Excellence for Pomegranate) की स्थापना हेतु तकनीकी परामर्श

गुजरात राज्य कृषि विभाग द्वारा मोरबी (गुजरात) के निकट “अनार उत्कृष्टता केंद्र (Centre of Excellence for Pomegranate)” की स्थापना हेतु तकनीकी परामर्श एवं सुझाव प्रदान करने के लिए आमंत्रण प्राप्त होने पर, भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर के वैज्ञानिकों का दल डॉ. रंजन कुमार सिंह, डॉ. संग्राम एस. धुमाळ, डॉ. सोमनाथ एस. पोखरे एवं डॉ. नम्रता ए. गिरी ने ८–९ जनवरी, २०२५ को गुजरात राज्य कृषि विभाग के अधिकारियों के साथ प्रस्तावित स्थल का दौरा किया।

टीम ने सुरेन्द्रनगर, धांगद्रा एवं मोरबी क्षेत्रों के अनार बागानों का निरीक्षण किया तथा सुरेन्द्रनगर स्थित सरकारी नर्सरी फार्म में लगभग ८० अनार किसानों के साथ संवाद किया। इस अवसर पर डॉ. सोमनाथ पोखरे एवं डॉ. नम्रता ए. गिरी ने "गुणवत्तापूर्ण अनार उत्पादन हेतु वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन पैकेज" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् १० जनवरी, २०२५ को गांधीनगर में टीम ने निदेशक (बागवानी), गुजरात एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक कर उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना से संबंधित तकनीकी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की।

राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, दल द्वारा गुजरात में अनार बाजार एवं किसानों के खेतों का भ्रमण

अनार किसानों को राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र दल द्वारा व्याख्यान

किसानों के खेतों में अनार पौध निरीक्षण

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों की गुजरात राज्य के उद्यान निदेशक के साथ बैठक

अनार में श्रेष्ठ पराग दाताओं (Pollen doner) की पहचान हेतु पराग गुण और SSR जीनोटाइपिंग का मूल्यांकन

इस अध्ययन में ११ अनार जीनोटाइप्स के बीच पराग गुणों और अनुवंशिक विविधता का मूल्यांकन किया गया। इसके लिए फेनोटाइपिक विशेषताओं और SSR आणविक मार्कर विश्लेषण का उपयोग किया गया। पराग अंकुरण (Pollen germination), जीवन शक्ति (viability), पराग नलिका की लंबाई (tube length) और रूप रेखा (morphology) को इन विट्रो परिस्थितियों में आंका गया। पराग अंकुरण (Pollen germination) में भिन्नता देखी गई, जो ६६.२३% (सोलापुर अनारदाना) से लेकर ९२% (सोलापुर लाल) तक रही। पराग नलिका की लंबाई ३०३.९५ µm (सोलापुर अनारदाना) से लेकर ५८३.७१ µm (ऑरेंज चाइना) तक पाई गई। पराग जीवन शक्ति परीक्षण में मान ६६.९४% (मृदुला) से ९४.२३% (P-१३) तक रहे। पराग रूप रेखा विश्लेषण में अधिकांश जीनोटाइप्स में अंडाकार (Oval) पराग का प्रभुत्व देखा गया, जिसमें गणेश जेनेटाइप में इसकी मात्रा सबसे अधिक (५३.१७%) रही। कुछ जीनोटाइप्स में श्रेष्ठ पराग प्रदर्शन के परिणाम यह संकेत देते हैं कि ये जीनोटाइप्स हाइब्रिडाईजेशन और बाग प्रबंधन हेतु संभावित श्रेष्ठ पराग दाता हो सकते हैं।

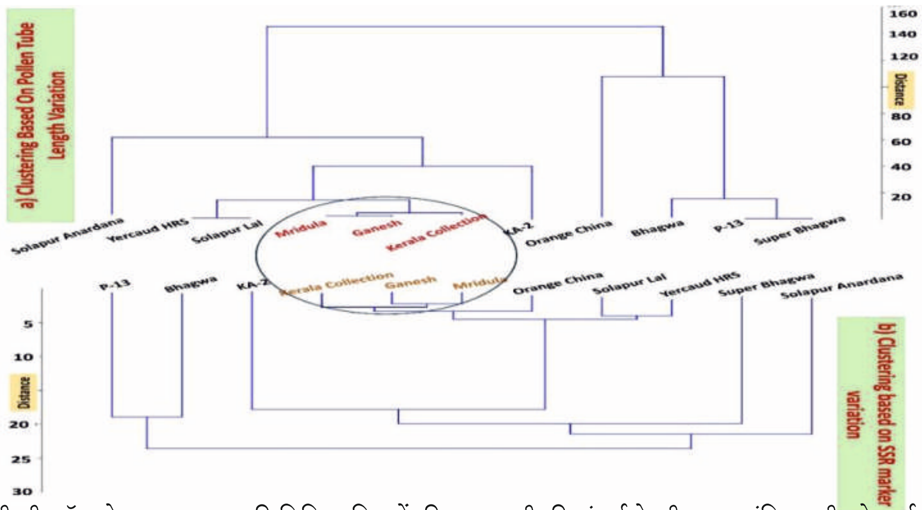

एन.टी.एस.वाई.एस.-पी.सी. सॉफ्टवेयर द्वारा अनार की विभिन्न किस्मों की पराग नली की लंबाई के बीच आनुवंशिक दूरी को दर्शाता डेंड्रोग्राम

१९ SSR प्राइमरों का उपयोग कर इन ११ अनार जीनोटाइप्स का आणविक विश्लेषण किया गया, जिसमें उच्च बहुरूपता (Polymorphism) देखी गई — ८९% प्राइमर १००% बहुरूपी (polymorphic) पाये गए। इससे जेनेटोटाइप्स के स्पष्ट विभेदन (genotypic differentiation) की सुविधा मिली। SSR डेटा और पराग गुणों (pollen traits) के आधार पर क्लस्टर विश्लेषण में देखा गया कि केरल कलेक्शन, मृदुला और गणेश जैसे जीनोटाइप्स में आनुवंशिक समानता अधिक थी, जबकि सोलापुर अनारदाना और P-१३ के बीच उच्च अंतर (high divergence) पाया गया। पराग फेनोटाइपिक डेटा को आणविक मार्करों के साथ एकीकृत करने से पराग प्रदर्शन के आनुवंशिक आधार की जानकारी प्राप्त हुई। यह परिणाम SSR मार्करों के उपयोग को समर्थन देते हैं, जो श्रेष्ठ पराग दाताओं के चयन में सहायक हो सकते हैं। ऐसे चयन से अनार में फल-संयोजन (fruit set) और संकरण (hybridization) की क्षमता बढ़ाई जा सकती है।

(पी. रूपासौजन्या, ए. आर. कदम, ए. मडावे, के. डी. बाबू और राजीव अरविंद मराठे)

अनार के पौधों में सैलिसिलिक अम्ल (Salicylic acid) के मूल्यांकन हेतु HPLC पद्धति

सैलिसिलिक अम्ल का अनुमान लगाने के लिए HPLC पद्धति का एक प्रोटोकॉल आइसोक्रैटिक सिस्टम का उपयोग कर अनुकूलित किया गया। इस पद्धति के अनुकूलन में मोबाइल फेज़ में ऑर्गेनिक सॉल्वेंट का अनुपात और स्टैंडर्ड तैयार करने हेतु सॉल्वेंट का pH प्रमुख परिवर्तन थे। HPLC प्रोटोकॉल के अनुकूलन के पश्चात, नमूना निष्कर्षण प्रक्रिया का अनुकूलन पत्ती और फल का छिलका का उपयोग कर किया गया, ताकि सैलिसिलिक अम्ल के मुक्त (free) और मुक्त+बंधित (free+bound) रूप का अनुमान लगाया जा सके। लिक्विड नाइट्रोजन निष्कर्षण से सीधे सॉल्वेंट निष्कर्षण की तुलना में अधिक पीक क्षेत्र (peak area) प्राप्त हुआ और नमूने के pH समायोजन के बाद परिणाम बेहतर आए। सैलिसिलिक अम्ल का रिटेंशन समय ३.८ मिनट था। अनुकूलित पद्धति के अनुसार Limit of Detection (LOD) ०.१६ mg/kg और Limit of Quantification (LOQ) ०.४८ mg/kg रही। रैखिक सीमा (Linear range) १०–१०० ppm थी, जिसमें R^2 = ०.९९९ प्राप्त हुआ।

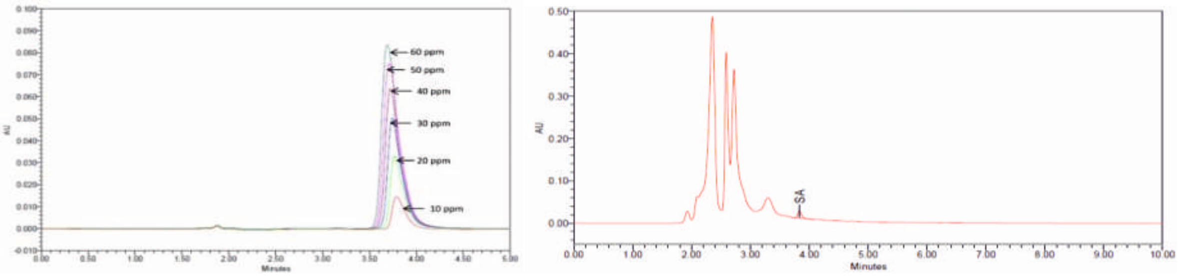

HPLC क्रोमैटोग्राम: सैलिसिलिक अम्ल स्टैंडर्ड (बाएँ), पत्ती में सैलिसिलिक अम्ल का मुक्त रूप (दाएँ)

(पी. रायगोंड और राजीव अरविंद मराठे)

अनार दानों के भूरापन के लिए पत्ती आधारित जैव रासायनिक मार्कर की पहचान

अनार दानों का भूरापन के प्रति प्रतिरोध या संवेदनशीलता का प्रारंभिक स्तर पर मूल्यांकन करने के लिए, पत्ती आधारित चार प्रमुख जैव रासायनिक पैरामीटर पहचाने गए, जिनका अनार दानों का भूरापन के साथ महत्वपूर्ण सहसंबंध था। इसके लिए अनार दानों का भूरापन के संदर्भ में छह विपरीत अनार जीनोटाइप्स का चयन किया गया (प्रतिरोधी: जोधपुर कलेक्शन, IC३१८७५४, बेदाना थिन स्किन और संवेदनशील: गणेश, १२०५, G१३७)। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि, पत्ती की जैव रासायनिक संरचना, प्रतिरोधी और संवेदनशील जीनोटाइप्स में महत्वपूर्ण रूप से भिन्न थी, जो अनार दानों का भूरापन प्रतिरोध में पत्ती आधारित जैव रासायनिक पैरामीटर की भूमिका को दर्शाता है।

परीक्षित पैरामीटरों में फिनायलएलनिन अमोनिया लाइऐज़ (Phenylalanine Ammonia Lyase), पॉलीफेनोल ऑक्सीडेज (Polyphenol Oxidase), कुल मुक्त अमीनो एसिडस् (Total Free Amino Acids) और कुल क्लोरोफिल (Total Chlorophyll) में प्रतिरोधी और संवेदनशील जीनोटाइप्स के बीच स्पष्ट भिन्नता देखी गई। प्रतिरोधी जीनोटाइप्स में फिनाइलएलनिन अमोनिया लाइएज़ (Phenylalanine Ammonia Lyase) की गतिविधि में २२% की कमी देखी गई; पॉलीफिनॉल ऑक्सीडेज़ (Polyphenol Oxidase) की गतिविधि ८६% अधिक पाई गई। कुल मुक्त अमीनो अम्ल (Total Free Amino Acids) की मात्रा ४९% अधिक रही। कुल क्लोरोफिल (Total Chlorophyll) में ९६% की वृद्धि दर्ज की गई। ये पत्ती आधारित जैव रासायनिक मार्कर और कुछ आणविक (Molecular) मार्कर बड़े पैमाने पर जीनोटाइप्स/हाइब्रिड लाइनों की स्क्रीनिंग में उपयोगी प्रमाणित होंगे।

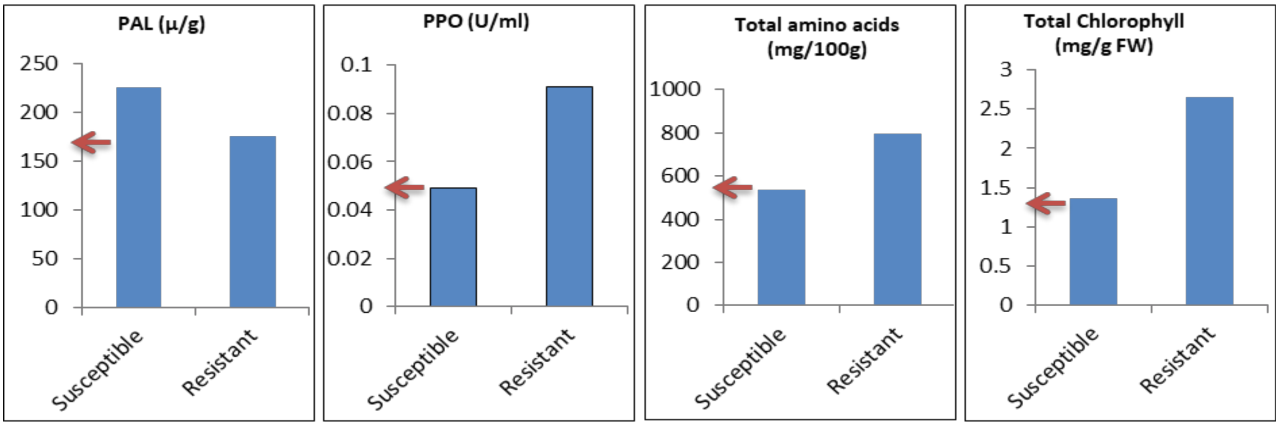

विपरीत जर्मप्लाज़्म में दाना भूरेपन से महत्वपूर्ण सहसंबंध रखने वाले पत्तियों पर आधारित जैव-रासायनिक मापदंड

(पी. रायगोंड, एस. परशुराम और राजीव अरविंद मराठे)

अनार में फल फटने और अनार दानों का भूरापन के लिए बहुरूपी सरल अनुक्रम पुनरावृत्ति (Polymorphic SSR) मार्करों की पहचान

इस अध्ययन का उद्देश्य फल फटने और अनार दानों का भूरापन में विपरीत अनार जीनोटाइप्स को भिन्न करने वाले Polymorphic SSR प्राइमरों की पहचान करना था, ताकि उन्हें लिंकज मैपिंग (Linkage Mapping) में उपयोग किया जा सके। फल फटने के लिए चार लाइनों का चयन किया गया (प्रतिरोधी: IC-३१८७१८, १२०१ व संवेदनशील: येरकौड HRS, काबुल येलो)। इन चार लाइनों का ६४ SSR प्राइमरों के साथ जीनोटाइपिंग की गई, जिनमें १६ प्राइमर बहुरूपी पाए गए (PIC: ०.२५–०.६३, औसत ०.४९)। PgSSR४ और PgSSR८६ ने प्रतिरोधी और संवेदनशील जीनोटाइप निर्धारण को प्रभावी ढंग से अलग किया। अनार दानों का भूरापन (अनार बीज का भूरापन) के लिए चार लाइनों का चयन किया गया (कम भूरापन : IC-३१८७७९, काबुल येलो व उच्च भूरापन : Crenado-de-elcho, P-१६)। इन चार लाइनों का ६० SSR प्राइमरों परीक्षण किया गया, जिनमें १५ बहुरूपी (Polymorphic) पाए गए (PIC: ०.१२–०.६८, औसत ०.४५)। PgSSR४८ और PgSSR७६ ने मजबूत व स्पष्ट अंतर दिखाया। विशेष रूप से PgSSR४८ ने फल फटने और अनार दानों का भूरापन दोनों के लिए विपरीत जीनोटाइप्स को भिन्न किया, जिससे इसका लिंकेज मैपिंग में महत्वपूर्ण उपयोग होगा।

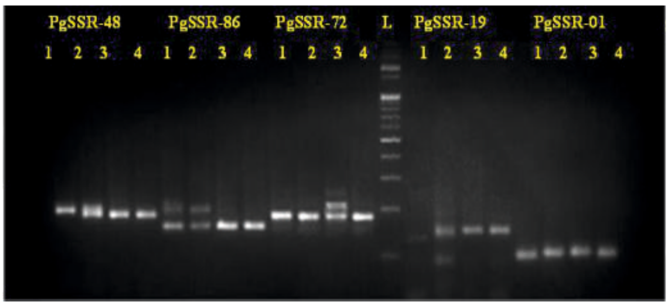

पॉलीमॉर्फिक SSR प्राइमर्स (PgSSR48, PgSSR86, PgSSR72, PgSSR19, PgSSR1) का उपयोग कर विभिन्न अनार जीनोटाइप्स का डीएनए प्रवर्धन
(L: 100bp Ladder; 1: 1201; 2: IC-318718; 3: Yercaud HRS; 4: Kabul Yellow)

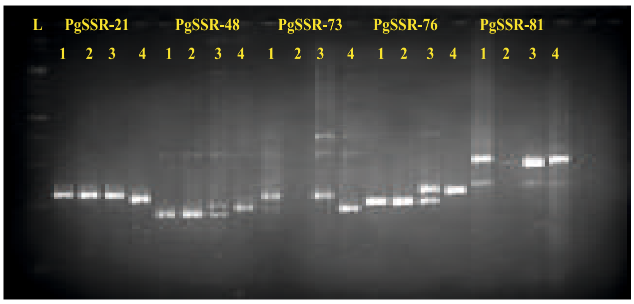

पॉलीमॉर्फिक SSR प्राइमर्स (PgSSR 21, PgSSR 48, PgSSR 73, PgSSR 76, PgSSR 81) का उपयोग कर विभिन्न अनार जीनोटाइप्स का डीएनए प्रवर्धन (L- 100bp Ladder, 1- Kabul yellow, 2- IC-318779, 3- Crenedeo-de-elcho, 4- P-16)

(एस. परशुराम, पी. रायगोंड एवं राजीव अरविंद मराठे)

अनार में गुणसूत्र मानचित्रण हेतु नवीन लाँग नॉन-कोडिंग RNA और उनके लक्ष्य जीन आधारित SSR मार्करों का विकास

अनार में फल विकास और तनाव के दौरान व्यक्त होने वाले कुल दो हज़ार पांच सौ बीस (२,५२०) LncRNA का इन-सिलिको विश्लेषण किया गया। इन अनुक्रमों में कुल पाँच हज़ार तीन सौ सत्तानवे (५,३९७) SSR मोटिफ़ पहचाने गए और दो हज़ार दो सौ बारह (२,२१२) LncRNA-SSR प्राइमर डिज़ाइन किए गए। ePCR सत्यापन के माध्यम से, दो हज़ार एक सौ सत्ताइस (२,१२७) प्राइमर ट्यूनिशिया गुणसूत्रों पर मान्य किए गए। इसके बाद चार जीनोम के ePCR में छह सौ चौतीस (६३४) सिंगल एलील उत्पादन करने वाले LncRNA प्राइमर की पहचान हुई। इन ६३४ सूचनात्मक मार्करों को भौतिक रूप से ट्यूनिशिया गुणसूत्रों पर स्थित किया गया।

अगले चरण में, इन नवीन मार्करों को कार्यात्मक भूमिका सौंपने हेतु, LncRNA अनुक्रमों का तिरानवे (९३) अद्वितीय जीनों के खिलाफ लक्ष्य विश्लेषण किया गया, जिन्हें अनार में फल फटने के दौरान व्यक्त होने की रिपोर्ट मिली है। इस विश्लेषण से उन्नीस (१९) लक्ष्य जीन (Target Gene) पहचाने गए, जिन्हें कुल पाँच सौ तीस (५३०) अद्वितीय LncRNA अनुक्रमों द्वारा बहुपरक लक्षित किया गया। इन १९ लक्ष्य जीनों में से तेरह (१३) जीन फल विकास से संबंधित कार्यात्मक भूमिका वाले पाए गए। ये परिणाम नेटवर्क विश्लेषण द्वारा पुष्टि किए गए, जिसमें LncRNA और उनके लक्ष्य जीनों की अंतःक्रियाओं को दर्शाया गया।

हमने इन ९३ अद्वितीय जीनों का उपयोग करके अड़तीस (३८) EST-SSR मार्करों का डिज़ाइन भी किया। अंततः, एक सौ तीन (१०३) प्राइमर प्रयोगशाला सत्यापन के लिए चयनित किए गए, जिनमें से पैंसठ (६५) प्राइमर LncR-SSR और अड़तीस (३८) EST-SSR लक्ष्य जीनों से संबंधित थे। ये मार्कर अनार में फल फटने की सहिष्णुता के मानचित्रण में उपयोगी होंगे।

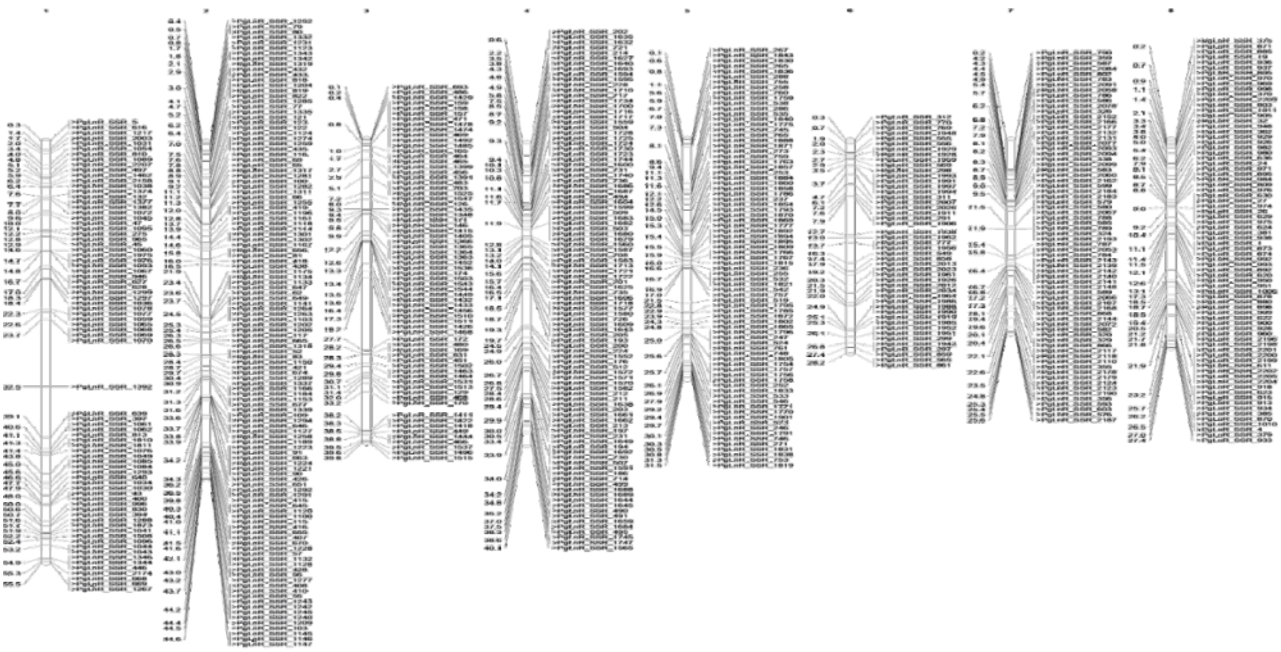

ट्यूनिशिया अनार गुणसूत्रों पर ६३४ LnRNA-SSR मार्करों का भौतिक वितरण मानचित्रण

(पी. जी. पाटिल, पी. रायगोंड, एस. परशुराम, सी. अवचारे, के. डी. बाबू एवं आर. ए. मराठे)

लैक्टोज असहिष्णुता के लिए गैर-डेयरी आधारित अनार की छाल युक्त योगर्ट

सोयाबीन दूध से बने योगर्ट पोषण मूल्य, हाइपोएलर्जेनिक स्वभाव और शाकाहारी एवं लैक्टोज असहिष्णु व्यक्तियों के लिए उपयुक्तता के कारण बढ़ती लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं। अनार की छाल का अर्कयुक्त सोया योगर्ट विकसित किया गया, और इसके भौतिक-रासायनिक गुण, सूक्ष्मजीव स्थिरता, एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि और संवेदी स्वीकार्यता का विश्लेषण किया गया। बॉक्स-बेन्केन डिज़ाइन ऑफ RSM का उपयोग किया गया, जिसमें घटक थे, सोया दूध का TSS (१०–१६°Bx), स्टार्टर कल्चर (लैक्टोबेसिलस बल्गारिकस) का प्रतिशत (०.५–१.५%) और अनार की छाल का अर्क (०५–१५%)।

सोया दूध (TSS १३°Bx), १% लैक्टोबेसिलस बल्गारिकस और १०% अनार छाल अर्क वाला योगर्ट सबसे अधिक स्वीकार्य पाया गया। इसने १२७ मिलीग्राम GAE/१०० ग्राम कुल फिनोल्स प्रदान किए (बिना छाल के योगर्ट में ३८ mg GAE/१०० ग्राम), ५०% एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि (बिना छाछ के योगर्ट में २९%) और ५.२% प्रोटीन (बिना छाछ के योगर्ट में ५.४%) प्रदान कीया। २१ दिन के रेफ्रिजरेटेड भंडारण के दौरान लैक्टोबेसिलस बल्गारिकस की न्यूनतम जीवित संख्या बनाए रखी गई और २१ दिनों तक सुरक्षित सेवन योग्य पाई गई। यह विकसित सोया योगर्ट लैक्टोज असहिष्णु व्यक्तियों के लिए आदर्श, एंटीऑक्सीडेंट और प्रोटीन में समृद्ध, और प्रोबायोटिक होने के कारण डेयरी योगर्ट की तरह आंत का स्वास्थ्य बनाए रखता है।

(एन. ए. गिरी, एन. एन. गायकवाड और राजीव अरविंद मराठे)

रा. अना. अनु. कें., सोलापुर के कर्मचारियों द्वारा भाग लिए गए कार्यक्रम (सेमिनार/वेबिनार/संगोष्ठी/सम्मेलन)

- राष्ट्रीय सम्मेलन: "फलोत्पादन क्षेत्र के रूपांतरण के लिए डिजिटल तकनीकें", भारतीय बागवानी विज्ञान अकादमी (IAHS) एवं भा.कृ.अनु.प. के आयोजन में, २८–३० जनवरी २०२५, भा.कृ.अनु.प.-IARI, नई दिल्ली (डॉ. रंजन कुमार सिंह, डॉ. मन्जुनाथ, डॉ. मल्लिकार्जुन एम. एच.)
- राष्ट्रीय सम्मेलन: "ग्रामीण विकास के लिए नवोन्मेषी तकनीकें और उनका व्यावसायीकरण", ०३–०५ मार्च २०२५, भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर, पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर विश्वविद्यालय और एन. बी. नवल सिहगड़ इंजीनियरिंग कॉलेज, सोलापुर द्वारा सह-आयोजित।
- दूसरा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन: "सस्टेनेबिलिटी के लिए जैव प्रौद्योगिकी में नवाचार", १०–११ मार्च २०२५, वी.जी. शिवदरे कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स, कॉमर्स एंड साइंस, सोलापुर (डॉ. पी. रूपासौजन्या)।
- विश्व बौद्धिक संपदा दिवस-२०२५, १ मई २०२५, भा.कृ.अनु.प.–रा. अना. अनु. कें., सोलापुर (सभी वैज्ञानिक) ।

किसानों/छात्रों/उद्यमियों के लिए प्रशिक्षण

फील्ड डे:

- रा. अना. अनु. कें., सोलापुर के वैज्ञानिकों की प्रगतिशील किसानों के अनार बागों (गौड़वाड़ी, सांगोला) में भ्रमण एवं संवाद।

कार्यशालाएं :

1. ''कृषि में उन्नत तकनीकों हेतु किसान-वैज्ञानिक कार्यशाला'', २२ मई २०२५, एस. ई. आर. बी. द्वारा प्रायोजित, प्रतिभागी: ६२ (डॉ. पी. रूपासौजन्या)
2. ''गुणवत्तापूर्ण अनार उत्पादन'' पर एक दिवसीय कार्यशाला एवं किसान-वैज्ञानिक संवाद, १७ जनवरी २०२५, मंडी, म्हसवड, प्रतिभागी: १२० (सह-निर्देशक: डॉ. सोमनाथ पोखरे, डॉ. मंजुनाथ एन., डॉ. मल्लिकार्जुन एम. एच., डॉ. चंद्रकांत अवचारे)

प्रशिक्षण कार्यक्रम :

1. एस. ई. आर. बी. सोशल साइंटिफिक रिस्पॉन्सिबिलिटी (SSR) के अंतर्गत छात्र प्रशिक्षण कार्यक्रम दिसंबर २०२४ से मार्च २०२५ के बीच आयोजित किया गया, जिसे एस. ई. आर. बी., डी एसटी (भारत सरकार) द्वारा प्रायोजित किया गया। प्रतिभागी: ०१ (डॉ. पी. रूपा सौजन्या)।
2. 'पोषण, अजैविक एवं जैविक तनाव प्रबंधन के माध्यम से निर्यात गुणवत्ता अनार उत्पादन' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम ३० जनवरी से १ फरवरी २०२५ के दौरान आयोजित किया गया, जिसे वेलाग्रो बायोसाइंसेज़ प्रा. लि. द्वारा प्रायोजित किया गया। प्रतिभागी: ३६ (समन्वयक: डॉ. सोमनाथ पोखरे सह-समन्वयक: डॉ. निलेश गायकवाड़ एवं डॉ. चंद्रकांत अवचारे)।
3. 'अनार के कीट एवं रोग प्रबंधन' विषय पर कैस्पर एग्रो साइंस और इफ्को के सहयोग से ८ –९ मार्च २०२५ को हागरिबोम्मनहल्ली में ''किसान संवाद एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम'' आयोजित किया गया। प्रतिभागी: ४०० किसान (डॉ. मल्लिकार्जुन एम.एच. एवं डॉ. मंजुनाथ एन.)।
4. 'अनार का गुणवत्ता उत्पादन, कटाई के बाद प्रबंधन, मूल्य संवर्धन, प्रसंस्करण, पैकेजिंग, विपणन एवं निर्यात' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम २४–२५ फरवरी २०२५ को आई. आई. पी. एम., बेंगलुरु में आयोजित किया गया, जिसे आईआईपीएम, बेंगलुरु एवं के. ए. पी. पी. ई. सी., कर्नाटक सरकार द्वारा रा.अ.अनु.कें., सोलापुर के सहयोग से प्रायोजित किया गया। प्रतिभागी: ६० (डॉ. निलेश एन. गायकवाड़, डॉ. नम्रता गिरी एवं डॉ. सोमनाथ पोखरे)।
5. 'रोपण से लेकर कटाई तक: सफल अनार उत्पादन हेतु प्रमुख प्रथाएँ' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम १०–१२ मार्च २०२५ के दौरान आयोजित किया गया, जिसे प्लांटबायोटिक्स बायो-एग्री डिवीजन, ज़ाइटेक्स बायोटेक प्रा. लि. द्वारा प्रायोजित किया गया। प्रतिभागी: १५ (डॉ. पिंकी रायगोंड, डॉ. नम्रता ए. गिरी एवं डॉ. शिल्पा पी.)।
6. 'अनार में कीट, रोग एवं सूत्रकृमी प्रबंधन' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम १८ जून २०२५ को कॉर्टेवा एग्रिसाइंस प्रा. लि. द्वारा पाचेगांव खुर्द, सांगोला में आयोजित किया गया। प्रतिभागी: २३० (डॉ. सोमनाथ एस. पोखरे, डॉ. मल्लिकार्जुन एम.एच. एवं डॉ. मंजुनाथ एन.)।
7. 'महाराष्ट्र के वर्षा-छाया एवं सूखा-प्रवण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण अनार उत्पादन' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम २० जून २०२५ को भा. कृ. अनु. प.– रा. अ. अनु. कें., सोलापुर एवं मान देशी फाउंडेशन, म्हसवड, सातारा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। (डॉ. चंद्रकांत अवचारे, डॉ. सोमनाथ पोखरे, डॉ. मंजुनाथ एन., डॉ. मल्लिकार्जुन एम.एच., डॉ. बसन गौड़ा जी.)।
8. 'गुणवत्तापूर्ण अनार उत्पादन हेतु उत्तम उद्यानिकी प्रथाएँ' विषय पर दो किसान संवाद बैठकें २७ जून २०२५ को मान देशी फाउंडेशन के सहयोग से बिदाल (म्हसवड, जिला-सातारा) एवं निरनिमगांव (माळशिरस, जिला-सोलापुर) में आयोजित की गई। प्रतिभागी: २१० किसान (डॉ. सोमनाथ पोखरे, डॉ. चंद्रकांत अवचारे, डॉ. मंजुनाथ एन., डॉ. बसन गौड़ा जी.)।

पोषण, अजैविक और जैविक तनाव प्रबंधन के माध्यम से निर्यात गुणवत्ता अनार उत्पादन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, वेलाग्रो बायोसाइंसेज़ प्रा. लि. द्वारा प्रायोजित

मान देशी फाउंडेशन, म्हसवड, सातारा के सहयोग से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

आई. आई. पी. एम. , बेंगलुरु और के. ए. पी. पी. ई. सी., कर्नाटक सरकार के सहयोग से आईआईपीएम, बेंगलुरु में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

मान देशी फाउंडेशन के सहयोग से मार्डी, म्हसवड में आयोजित प्रशिक्षण एवं किसान–वैज्ञानिक संवाद बैठक

प्लांटबायोटिक्स–बायो एग्री डिवीजन, ज़ाइटेक्स बायोटेक प्रा. लि. द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

अन्य कार्यक्रम

१. डॉ. राजीव अरविंद मराठे, डॉ. सोमनाथ एस. पोखरे और डॉ. चंद्रकांत अवचारे ने मानदेशी महोत्सव के तहत 'किसान सम्मेलन' में ०७ फरवरी २०२५ को नेरुल, मुंबई में भाग लिया।

२. डॉ. रंजन कुमार सिंह ने 'सत्रहवीं कृषि विज्ञान कांग्रेस' में भाग लिया, जिसे राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (NAAS) द्वारा २० से २२ फरवरी २०२५ को जी. बी. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तराखंड में आयोजित किया गया।

३. डॉ. निलेश गायकवाड़ और डॉ. सोमनाथ एस. पोखरे ने 'अनार हितधारक बैठक' में भाग लिया, जिसमें विश्व बैंक अधिकारियों ने २१ फरवरी २०२५ को रा.अना.अनु.कें., सोलापुर में उपस्थित होकर संवाद किया।

४. डॉ. निलेश गायकवाड़ ने ०६ मार्च २०२५ को कॉस्मेटिक टेक्नोलॉजी, PAHSU, सोलापुर की BOS उपसमिति बैठक में भाग लिया, जहाँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के अनुसार पाठ्यक्रम के अंतिम रूप पर चर्चा हुई।

५. भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र ने भा.कृ.अनु.प.-दक्षिण क्षेत्र खेल प्रतियोगिता २०२५ में भाग लिया, जो ०८ से ११ अप्रैल २०२५ को भा.कृ.अनु.प.–गन्ना प्रजनन केंद्र, कोयंबत्तूर में आयोजित की गई।

६. डॉ. सोमनाथ एस. पोखरे ने विकसित कृषि संकल्प अभियान (VKSA) खरीफ २०२५ में २७ मई से १२ जून २०२५ के दौरान समन्वयक के रूप में कार्य किया।

७. डॉ. बसन गौड़ा, जी. ने NAAS सामान्य सभा बैठक एवं संस्थापक दिवस कार्यक्रम में भाग लिया, जो ०५ जून २०२५ को NASC, नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

८. डॉ. निलेश गायकवाड़ ने PMSKY, MoFPI के अंतर्गत कोल्ड चेन परियोजना (एम/एस वैष्णवी अंगूर एवं अनार प्रसंस्करण प्रा. लि., सोलापुर, महाराष्ट्र) का संयुक्त निरीक्षण टीम के सदस्य के रूप में २२ जून २०२५ को निरीक्षण किया।

निदेशक के साथ रा.अना.अनु.कें.,के खेल दल के सदस्य

डॉ. राजीव अरविंद मराठे, निदेशक, रा.अना.अनु.कें., मानदेशी महोत्सव, नेरुल, मुंबई मे उपस्थिती

रा.अना.अनु.कें. के कर्मचारियों द्वारा प्राप्त प्रशिक्षण

1. कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI in Agriculture)' विषय पर प्रशिक्षण, कंप्यूटर एप्लिकेशन विभाग, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा ०६ से १० जनवरी २०२५ तक ऑनलाइन आयोजित किया गया। (प्रतिभागी: डॉ. रंजन कुमार सिंह)।
2. MOOC: कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता', MANAGE, हैदराबाद द्वारा ०१ से २८ फरवरी २०२५ तक ऑनलाइन आयोजित किया गया। (प्रतिभागी: डॉ. रंजन कुमार सिंह)।
3. ISO/IEC १७०२५:२०१७ का कार्यान्वयन और आंतरिक ऑडिटिंग' प्रशिक्षण,१७ से १८ फरवरी २०२५ (ऑनलाइन) और ०५

से ०७ मार्च २०२५, भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर में आयोजित।
(प्रतिभागी: डॉ. निलेश गायकवाड़, डॉ. पिंकी रायगोंड, डॉ. मंजुनाथ एन., डॉ. मल्लिकार्जुन एम.एच. और डॉ. नम्रता गिरी)।

4. ग्लोबल GAP IFA V६ प्रशिक्षण कार्यक्रम', २१ से २५ अप्रैल २०२५, प्रोजेक्ट यूनिट, MIDH डिवीजन, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, कृषि भवन, नई दिल्ली द्वारा पुणे में आयोजित। (प्रतिभागी: डॉ. मल्लिकार्जुन एम.एच.)।
5. पादप जल संबंध: सिद्धांत और मापन के परिचय, सैप फ्लो मीटर और साइक्रोमीटर के साथ', ICT इंटरनेशनल प्रा. लि. द्वारा २१ से २५ अप्रैल २०२५ को ऑनलाइन आयोजित। (प्रतिभागी: डॉ. पिंकी रायगोंड)
६. सभी वैज्ञानिक कर्मचारियों ने iGOT पोर्टल के माध्यम से विभिन्न ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया।

ISO/IEC 17025:2017 के कार्यान्वयन और आंतरिक ऑडिटिंग' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषि प्रदर्शनियाँ / किसान मेले में भागीदारी / प्रदर्शित प्रौद्योगिकी

१. भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र ने 'सत्रहवीं कृषि विज्ञान कांग्रेस' में भाग लिया और स्टॉल प्रदर्शित किया, जिसे राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (NAAS) द्वारा २० से २२ फरवरी २०२५ को जी. बी. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर में आयोजित किया गया। (प्रतिभागी: डॉ. रंजन कुमार सिंह)
२. रा.अना.अनु.कें. ने पूसा किसान मेला में भाग लिया और स्टॉल प्रदर्शित किया, जिसे आई ए आर आई परिसर, नई दिल्ली द्वारा २२ से २४ फरवरी २०२५ को आयोजित किया गया। (प्रतिभागी: डॉ. रंजन कुमार सिंह)।
३. राष्ट्रीय उद्यानिकी मेला–२७ फरवरी से ०१ मार्च २०२५ तक IIHR, बेंगलुरु, कर्नाटक द्वारा आयोजित किया गया। (प्रतिभागी: डॉ. शिल्पा परशुराम एवं डॉ. मंजुनाथ एन.)।

कर्मचारियों द्वारा प्राप्त पुरस्कार / सम्मान

१. डॉ. सोमनाथ एस. पोखरे, वरिष्ठ वैज्ञानिक (सूत्रकृमी विज्ञान), को इंडो-इज़राइल एग्रीकल्चर प्रोजेक्ट (IIAP) के अंतर्गत अनार के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का क्लस्टर हेड बनने के लिए मान्यता प्राप्त हुई। यह परियोजना MIDH, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार और MASHAV, इज़राइल एम्बेसी द्वारा संयुक्त रूप से क्रियान्वित की जा रही है। यह सम्मान उन्हें ०३ जून २०२५ को प्रदान किया गया।

२. डॉ. बसन गौड़ा जी, वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि कीट विज्ञान), को राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (NAAS), नई दिल्ली में प्रतिष्ठित NAAS एसोसिएट (प्लांट प्रोटेक्शन) के रूप में चयनित किया गया। यह सम्मान उन्हें ०५ जून २०२५ को प्रदान किया गया।

३. श्री राहुल देविदास डमाले को नेताजी सुभाष भा.कृ.अनु.प. अंतर्राष्ट्रीय फैलो २०२३-२४ से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार कृषि शिक्षा विभाग, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली द्वारा १४ जनवरी २०२५ को प्रदान किया गया।

४. डॉ. पिंकी रायगोंड को इंडियन पोटैटो एसोसिएशन द्वारा चंद्र प्रभा सिंह युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त, उन्हें 'IPA मेडल फॉर बेस्ट पेपर अवार्ड' ये पुरस्कार उन्हें २७ से २९ जनवरी २०२५ को राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रदान किए गए।

५. डॉ. दिनेश बाबू को भा.कृ.अनु.प.-IIHR, बेंगलुरु की सोसाइटी फॉर प्रमोशन ऑफ हॉर्टिकल्चर के पश्चिम क्षेत्र के काउंसलर के रूप में चयनित किया गया, अवधि: दो वर्ष, जून-जुलाई **२०२५** से।

६. दीपाली कुलकर्णी, पाटिल पी.जी. और मराठे आर.ए. (**२०२५**) को उनके पेपर 'SSR और जीन आधारित मार्कर विश्लेषण: अनार किस्मों में विशिष्ट और दुर्लभ एलील की पहचान' के लिए श्रेष्ठ मौखिक प्रस्तुति पुरस्कार प्रदान किया गया। यह सम्मान अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 'Innovations in Biotechnology for Sustainability (IBS२K२५)', १० से ११ मार्च २०२५, विजय गायकवाड़ शिवदरे कॉलेज ऑफ आर्ट्स, कॉमर्स एंड साइंस, सोलापुर, महाराष्ट्र में आयोजित सम्मेलन में प्रदान किया गया।

डॉ. बसन गौड़ा जी, NAAS एसोसिएट (प्लांट प्रोटेक्शन) पुरस्कार प्राप्त करते हुए

प्रौद्योगिकी विकास / प्रमाणण / व्यवसायिकरण / लिंकिंग / सहयोग / MoU हस्ताक्षर

क्र. सं.	विकसित / हस्तांतरित प्रोद्योगिकी	लाभार्थी का पता	MoU की तिथि
१.	इन विट्रो प्रोपोगेशन- अनार प्रजाती भगवा	कृषि बाउंटी (KB) प्रा. लि., चेन्नई, तमिलनाडु	०८.०४. २०२५
2.	अनार टू स्टेप हार्ड वुड कटिंग प्रोटोकॉल विथ बायो हार्डनिंग	श्री प्रवीण माने, प्रवीण डालिम्ब हाई टेक नर्सरी, बैरागवाड़ी, ता-माढा, जिला सोलापुर	२९.०४.२०२५
३.	ट्राइकोडरमा कोणसोरशिया टेक्नॉलोजी फॉर ग्रोथ प्रमोशन एण्ड रूट प्रोटेकक्षण अगैन्स्ट सॉइल बोर्न पॅथोजेन्स ऑफ पॉमग्रैनेट	कुसनी ग्रीन एग्री प्रा. लि., पुसद, जिला यवतमाल	१६.०६.२०२५
४.	नॉवेल बायोफॉर्म्यूलैशन फॉर पोटॅशियम फर्टिलाईज़र सप्लीमेंट इन पॉमग्रैनेट एण्ड प्रोसेस ऑफ प्रेपरैशन देरऑफ	कुसनी ग्रीन एग्री प्रा. लि., पुसद, जिला यवतमाल	१६.०६.२०२५

कुसनी ग्रीन एग्री प्रा. लि., पुसद, जिला यवतमाल के साथ प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

कृषि बाउंटी (KB) प्रा. लि., चेन्नई, तमिलनाडु के साथ प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

श्री प्रवीण माने, प्रवीण डालिम्ब हाई टेक नर्सरी, बैरागवाड़ी, ता-माढा, जिला सोलापुर के साथ प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

शैक्षणिक संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन (MoU)

रा.अना.अनु.कें., सोलापुर में छात्रों के प्रशिक्षण और अनुसंधान इंटर्नशिप की सुविधा प्रदान करने के लिए निम्नलिखित शैक्षणिक संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन (MoU) हस्ताक्षरित किए गए

क्र.सं.	लाभार्थी संस्थान	MoU की तिथि
१	रिसर्च एवं टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट सेंटर, सिंहगड कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग, सोलापुर	०४.०३.२०२५
२	डी.बी.एफ. दयानंद कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड साइंस, सोलापुर, महाराष्ट्र	२३.०४.२०२५
३	वालचंद इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, सोलापुर, महाराष्ट्र	०७.०५.२०२५
४	MIT विश्वप्रयाग विश्वविद्यालय, सोलापुर, महाराष्ट्र	०८.०५.२०२५

प्रकाशन

शोध पत्र

1. रायगोंड, पी., रूपा सौजन्या, पी., मोरे, ए., झोडगे, एस., गवाडे, एन., परशुराम, एस., गिरी, एन., पाटिल, पी., बाबू, डी., मराठे, आर. (२०२५)। अनार (*Punica granatum L.*) में फल गुणवत्ता सुधार हेतु बायोफोर्टिफिकेशन लक्षणों के लिए मोर्फो-न्यूट्रिशनल विविधता। *जर्नल ऑफ़ फूड कंपोजिशन एंड एनालिसिस*, १४१। (NAAS रेटिंग: १०.००)।
2. अवचारे, सी., पटेल, जे., सोलोमन, एस. एस., रायगोंड, पी., बाबू, के. डी., शिल्पा पी., सरकार, एस. एस., कुमार, एम., मञ्जुनाथ प्रसाद, सी. टी., मराठे, आर. ए. और सिंह, एन. वी. (२०२५)। अनार जातियों (*Punica granatum L.*) में लवण तनाव प्रतिक्रिया का मूल्यांकन। *प्लांट फिज़ियोलॉजी रिपोर्ट्स*, ३०, २४६–२५६। (NAAS रेटिंग: ७.५)।
3. बाबू, के. डी., मराठे, आर. ए., गणेशमूर्ति, ए. एन., राणे, जे., नाइकवाड़ी, बी. वी., रायगोंड, पी., रूपा सौजन्या, पी., और शिल्पा, पी. (२०२५)। अनार बागानों में संरक्षण बागवानी के माध्यम से एकीकृत मिट्टी उर्वरता प्रबंधन। *इंडियन जर्नल ऑफ़ फर्टिलाइजर्स*, २१(४): ३७०-३७९। (NAAS: ५.२९)।

पुस्तक अध्याय

- के. दिनेश बाबू, आर. ए. मराठे और एम. संकरन (२०२५) कैल्शियम, एंटीऑक्सीडेंट और एंज़ाइम्स की भूमिका और कार्यप्रणाली। संदर्भ: *Post-harvest Management of Fruits and Plantation Crops* (खंड १: मूल अवधारणाएँ), NIPA, नई दिल्ली। पृ. ६७–८८।

लोकप्रिय लेख

- पिंकी रायगोंड, निलेश एन. गायकवाड, नम्रता ए. गिरी, राजीव अरविंद मराठे (२०२५)। पोषण और जीविकोपार्जन सुरक्षा हेतु अनार। *केरला कृषकन* (अंग्रेज़ी जर्नल), खंड १३, अंक १, पृ. २१-३२।
- अमर कदम, रूपा सौजन्या पी., विपुल सांगनुरे, अजींक्या मंडावे, राजीव ए. मराठे (२०२५)। फल फसल जीनोमिक्स: मैपिंग अध्ययन के लिए प्रमुख बायोइन्फॉर्मेटिक उपकरण। *कृषि साइंस*, ६: ३६-४१।

प्रशिक्षण पुस्तिकाएँ

- सोमनाथ पोखरे, नम्रता गिरी, पिंकी रायगोंड, शिल्पा परशुराम और राजीव अरविंद मराठे (२०२५) प्रशिक्षण पुस्तिका "गुणवत्तापूर्ण अनार उत्पादन के लिए योग्य पद्धती: रोपाई से मूल्यवर्धन" १०-१२ मार्च, २०२५:१-४७

वीडियो का निर्माण

- *"भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर: एक परिचय"* (हिंदी), निर्माण और संपादन: डॉ. रंजन कुमार सिंह एवं डॉ. सोमनाथ पोखरे

गणतंत्र दिवस समारोह

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर ने २६ जनवरी २०२५ को ७६वां गणतंत्र दिवस मनाया। इस अवसर पर ध्वज का अनावरण डॉ. राजीव अरविंद मराठे, निदेशक, द्वारा सभी वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक और संविदात्मक कर्मचारियों की उपस्थिति में किया गया। समारोह में निदेशक द्वारा संबोधन दिया गया।

डॉ. राजीव अरविंद मराठे, निदेशक द्वारा ध्वज फहराना और रा.अना.अनु.कें. कर्मचारियों के साथ गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर समूह चित्र

अनुसंधान परामर्श समिति (RAC) की बैठक

१८ वीं आर.ए.सी. (अनुसंधान परामर्श समिति) की बैठक १५ मई २०२५ को भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता डॉ. सी. डी. माई, पूर्व ASRB अध्यक्ष, नई दिल्ली ने की। डॉ. के. दिनेश बाबू, सदस्य सचिव ने सभी RAC सदस्यों का स्वागत किया। डॉ. राजीव अरविंद मराठे, निदेशक, रा. अना. अनु. कें., सोलापुर ने भी सदस्यों का स्वागत और सम्मान किया। बैठक में प्रत्येक कार्य समूह (उद्यानिकी, फसल सुधार, सुरक्षा, उपरांत-फसल प्रौद्योगिकी) के एक वैज्ञानिक ने समूह की प्रमुख उपलब्धियों पर प्रस्तुति दी। अपराह्न में समिति ने प्रयोगशालाओं का दौरा किया। अध्यक्ष डॉ. सी. डी. माई ने संस्थान की उपलब्धियों और जनसंपर्क विस्तार व क्षमता निर्माण गतिविधियों के प्रयासों की सराहना की।

साथ ही, RAC अध्यक्ष और समिति सदस्यों द्वारा इस अवसर पर नए सुविधाओं जैसे पॉलीहाउस, ग्रीन हाउस ड्रायर और प्राकृतिक कृषि इकाई का उद्घाटन किया गया।

डॉ. सी. डी. माई, पूर्व ASRB अध्यक्ष, नई दिल्ली के अध्यक्षीय सत्र के तहत RAC बैठक

संस्थान अनुसंधान परिषद (IRC) की बैठक

१९वीं IRC बैठक २३ जून २०२५ को रा. अना. अनु. कें., सोलापुर में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता डॉ. राजीव अरविंद मराठे, निदेशक एवं IRC अध्यक्ष ने की और विषय विशेषज्ञ डॉ. डी. पी. वासकर, पूर्व निदेशक, VNMKV उपस्थित रहे। बैठक में संस्थान के वैज्ञानिकों ने पिछले IRC बैठक से अब तक की अनुसंधान उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। विशेषज्ञ और निदेशक ने चल रहे अनुसंधान कार्यों की समीक्षा की और संरक्षित कृषि, जैविक और प्राकृतिक कृषि तथा जैव-गहन अनार सुरक्षा पर नए अनुसंधान कार्य शुरू करने के सुझाव दिए।

डॉ. राजीव अरविंद मराठे द्वारा डॉ. डी. पी. वासकर, पूर्व निदेशक, VNMKV का स्वागत और रा. अना. अनु. कें., सोलापुर कर्मचारियों के साथ बैठक

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह

रा. अना. अनु. कें., सोलापुर ने २१ जून २०२५ को ११वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया। इस वर्ष का विषय था - "एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग" समारोह का उद्देश्य योग के माध्यम से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना था। कुल ६० कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस अवसर पर श्रीमती स्नेहल एस. पेंडसे, सोलापुर की प्रसिद्ध योग प्रशिक्षक ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और "आधुनिक जीवन में स्वास्थ्य के लिए योग का महत्व" विषय पर व्याख्यान दिया। उसके पश्चात उन्होंने विभिन्न योग आसनों का सामूहिक प्रदर्शन कराया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. शिल्पा परशुराम, वरिष्ठ वैज्ञानिक, ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह में केंद्र के कर्मचारी

विश्व बौद्धिक संपदा दिवस

१ मई २०२५ को 'विश्व IP दिवस' और "भारत में IPR मुद्दे" विषय पर सेमिनार का आयोजन रा. अना. अनु. कें. में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. राजीव अरविंद मराठे, निदेशक, रा. अना. अनु. कें., सोलापुर ने की। डॉ. के. दिनेश बाबू ने सेमिनार का परिचय दिया और कृषि में सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में IP की भूमिका पर प्रकाश डाला। डॉ. राजीव अरविंद मराठे ने उद्घाटन भाषण में बौद्धिक संपदा अधिकारों के महत्व, किस्म पर किसानों के अधिकार, PPV व FRA की भूमिका और भा.कृ.अनु.प. के IP पोर्टफोलियो पर चर्चा की। इसके पश्चात अतिथि व्याख्यान (वर्चुअल मोड) डॉ. कुनाल अनिल गायकवाड़, वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता (SRF), PPV व FRA, पुणे और डॉ. जे. स्टेनली, प्रमुख वैज्ञानिक (एंटोमोलॉजी) एवं सह-नोडल अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.-आई.आई.एम.आर., हैदराबाद द्वारा प्रस्तुत किए गए।

डॉ. राजीव अरविंद मराठे, निदेशक, रा.अना.अनु.कें., सोलापुर का स्वागत और डॉ. जे. स्टेनली, प्रधान वैज्ञानिक (कीट विज्ञान) / सह-नोडल अधिकारी, ITMU/ZTMU, भा.कृ.अनु.प.-IIMR, हैदराबाद द्वारा वर्चुअल माध्यम से प्रस्तुति

नववर्ष समारोह – २०२५

रा. अना. अनु. कें., सोलापुर के मनोरंजन क्लब (Recreation Club) ने नववर्ष २०२५ का उत्सव मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. राजीव अरविंद मराठे के नववर्ष संबोधन से हुई। पिछले वर्ष में उल्लेखनीय योगदान देने वाले कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। निदेशक ने सभी कर्मचारियों को उत्कृष्टता की ओर प्रयास करने और अनार किसानों के लिए बेहतर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया।

सामुदायिक संपर्क गतिविधियाँ

SCSP परियोजना

SCSP परियोजना की टीम (डॉ. संग्राम धुमाल, प्रमुख वैज्ञानिक; डॉ. नम्रता गिरी; डॉ. रूपा सौजन्या; श्री महादेव गोगांव) ने SCSP योजना के अंतर्गत अनार किसानों के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम और गतिविधियाँ आयोजित की।
इसमें पौध सामग्री, उर्वरक, कीटनाशक और अन्य कृषि इनपुट का वितरण, साथ ही सूखी भूमि क्षेत्र में गुणवत्ता पूर्ण अनार उत्पादन पर प्रशिक्षण शामिल था।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान	किसान लाभार्थियों की संख्या	कृषि इनपुट वितरित किए गए
१	इनपुट वितरण कार्यक्रम – २२.०१.२०२५	कारंबा, उत्तर सोलापुर	१५०	नॅपसॅक स्प्रेयर, ताडपत्री
२	इनपुट वितरण कार्यक्रम – १३.०३.२०२५	सोलापुर जिला	४९	ब्रश कटर
३	इनपुट वितरण कार्यक्रम – १७.०३.२०२५	भालवणी, तालुका मंगळवेढ़ा, सोलापुर	१५०	ताडपत्री, उर्वरक, नॅपसॅक स्प्रेयर, कीटकनाशक

लाभार्थी किसानों को SCSP कृषि इनपुट वितरण कार्यक्रम

"सातवाँ पोषण पखवाड़ा" उत्सव

भा.कृ.अनु.प.–रा. अना. अनु. कें., सोलापुर ने ८ अप्रैल से २२ अप्रैल २०२५ तक सातवें पोषण पखवाड़ा के उत्सव में सक्रिय रूप से भाग लिया और पोषण संबंधी जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित कीं। इस पहल के अंतर्गत, एस. एम। शंकरराव मोहिते पाटील विद्यालय, केगाव, सोलापुर के छात्रों के लिए "कुपोषण और संतुलित आहार का महत्व" विषय पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में ८० छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, साथ ही संस्थान के निदेशक और कर्मचारी उपस्थित थे। सत्र में संतुलित आहार के महत्व और स्थानीय रूप से उगाए जाने वाले ताजे फल, सब्जियाँ और दलहन आहार में शामिल करने के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

प्रसार गतिविधि गतिविधियों के तहत, छात्रों को स्वस्थ भोजन पैकेट वितरित किए गए ताकि बेहतर खानपान प्रथाओं को प्रोत्साहित किया जा सके और पोषण संदेश को व्यावहारिक रूप में पहुंचाया जा सके। इस कार्यक्रम का समन्वय डॉ. नम्रता गिरी, वैज्ञानिक, ने किया।

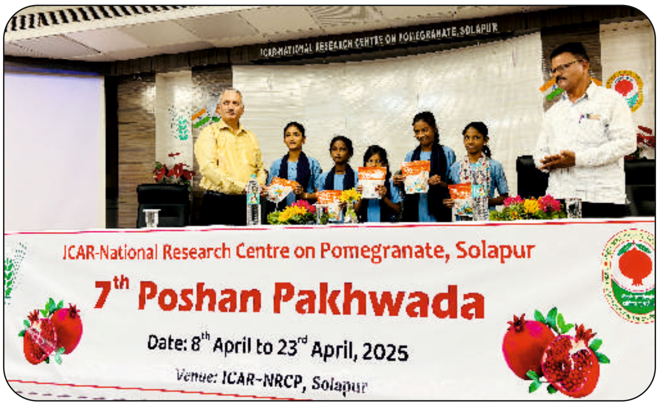

पोषण पखवाड़ा समारोह और छात्रों को स्वास्थ्यवर्धक भोजन पैकेट का वितरण।

किसान और छात्र आगंतुक

- आंध्र प्रदेश के अनंतपुर से छह किसानों के समूह ने १८ जून २०२५ को भा.कृ.अनु.प.–रा. अना. अनु. कें., सोलापुर का दौरा किया।
- लोकमंगल कॉलेज ऑफ़ एग्रीकल्चर, वडाला के ०६ बी.एससी (कृषि) (VIII सेमेस्टर) छात्रों ने ०३-०७ फरवरी २०२५ के दौरान RAWE व AIA कार्यक्रम के तहत रिसर्च स्टेशन से जुड़ाव के रूप में भा.कृ.अनु.प.–रा. अना. अनु. कें., सोलापुर का दौरा किया।
- लोकमंगल कॉलेज ऑफ़ एग्रीकल्चर के ७७ छात्रों ने २१ फरवरी २०२५ को एक्सपोज़र विजिट के दौरान भा.कृ.अनु.प.–रा. अना. अनु. कें., सोलापुर का दौरा किया।

प्रदर्शन ब्लॉक में तकनीकी जानकारी और क्षेत्र भ्रमण

रा. अना. अनु. कें., सोलापुर में विकसित अवसंरचना / सुविधाएँ

- अनार के प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए, भा.कृ.अनु.प.–रा. अना. अनु. कें., सोलापुर ने ८००० लीटर प्रति सप्ताह क्षमता वाली जीवामृत इकाई, सभी प्रकार के प्राकृतिक पौध सुरक्षा अर्क का उत्पादन करने वाली प्राकृतिक खेती इकाई, वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन इकाई और स्लरी यूनिट स्थापित की।
- संरक्षित अनार खेती के प्रयोगों के लिए प्राकृतिक वेंटिलेटेड पॉलीहाउस की स्थापना।
- सूखे अनार के दानों, अनारदाना उत्पादन आदि के लिए कम लागत और आर्थिक रूप से सक्षम ग्रीनहाउस ड्रायर विकसित किया गया।

प्राकृतिक खेती और स्लरी यूनिट

वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन इकाई और पॉलीहाउस

ग्रीनहाउस ड्रायर

विशिष्ट आगंतुक

रा. अना. अनु. कें., सोलापुर में नाबार्ड के जिला विकास प्रबंधकों (४८ सदस्य) का ०७ फरवरी २०२५ को अनुभव भ्रमण और बैठक

रा. अना. अनु. कें., सोलापुर में डॉ. एन. जी. शाह, सदस्य सचिव, और प्रो. ए.वी. सप्रे, सलाहकार, RGSTC मुंबई का २९ जनवरी २०२५ को भ्रमण एवं भेट

नई नियुक्तियाँ और पदभार ग्रहण

- **डॉ. बसन गौड़ा जी** – वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि कीट विज्ञान) –प्रत्यक्ष चयन के द्वारा १५ अप्रैल २०२५ से राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर में पदभार ग्रहण किया। इससे पूर्व वे भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक (ओडिशा) में वैज्ञानिक (कीट विज्ञान) के पद पर कार्यरत थे।
- **डॉ. रामनिवास** – वरिष्ठ वैज्ञानिक (फल विज्ञान) - प्रत्यक्ष चयन के द्वारा २८ अप्रैल २०२५ से राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर में पदभार ग्रहण किया। इससे पूर्व वे भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, कृषि विज्ञान केंद्र, भुज (कच्छ), गुजरात में कार्यरत थे।
- **डॉ. चंद्रकांत अवचारे** – वरिष्ठ वैज्ञानिक (फल विज्ञान) - प्रत्यक्ष चयन के द्वारा २३ अप्रैल २०२५ से राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर में पदभार ग्रहण किया।
- **डॉ. शिल्पा पी.** – वरिष्ठ वैज्ञानिक (आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन) - प्रत्यक्ष चयन के द्वारा १३ मई २०२५ से राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर में पदभार ग्रहण किया।

इलेक्ट्रॉनिक तथा मुद्रित माध्यमों द्वारा समाचार कवरेज

तरुण भारत संवाद

मंगळवेढा : पात्र शेतकऱ्यांना शेतीपूरक साहित्याचे वाटप करताना डाळिंब संशोधन केंद्राचे संचालक डॉ. राजीव मराठे व आदी.

राष्ट्रीय डाळिंब संशोधन केंद्राच्यावतीने १५० शेतकऱ्यांना शेतीपूरक साहित्याचे वाटप

प्रतिनिधी
मंगळवेढा

मंगळवेढा तालुक्यातील भाळवणी येथे सोलापूर येथील राष्ट्रीय डाळिंब संशोधन केंद्राच्या वतीने अनुसूचित जाती प्रवर्गातील शेतकऱ्यांसाठी १५० शेतकऱ्यांना शेतीपूरक साहित्याचे वाटप करण्यात आले.

यावेळी डाळिंब संशोधन केंद्राचे संचालक डॉ. राजीव मराठे, डॉ. संग्राम दुधाळ, डॉ. रुपा सौजन्य, सरपंच लक्ष्मण गायकवाड, उपसरपंच सुजाता लिगाडे, ग्रामसेवक सानिया तांबोळी, ग्रामपंचायत सदस्य शिवाजी दोडके, नामदेव चौगुले, सीताराम भगरे, तानाजी आवळेकर, सारंग लिगाडे, महादेव वरकुटे, उमेश शिंदे, श्रीराम पाटील, अण्णा पाटील, ज्ञानेश्वर पाटील, सुभाष गेजगे, बलभीम बेडगे, नामदेव दोडके, मच्छिंद्र बनसोडे, दगडू कैंगार, संजय कांबळे आदींसह शेतकरी उपस्थित होते.

डाळिंब संशोधन केंद्राचे डॉ. राजीव मराठे म्हणाले, की डाळिंब संशोधन केंद्राच्या माध्यमातून शेतकऱ्यांना डाळिंब पिकाचे संवर्धन करण्यासाठी विविध प्रकारच्या औषधांना व पिकावर पडलेल्या रोगाचे निर्मूलन करण्यासाठी दर्जेदार साहित्याचा पुरवठा करण्यावर भर दिला जातो. दुष्काळी भागातील शेतकऱ्यांच्या प्रगतीसाठी डाळिंब संशोधन केंद्राच्या माध्यमातून वेगवेगळे उपक्रम राबवले जातात. त्याचा दुष्काळी भागातील शेतकऱ्यांनी लाभ घ्यावा. या भागातील शेतीच्या पाण्याची गंभीर समस्या लक्षात घेता भविष्यात कमी पाण्यावर शेतीतील उत्पन्न निघावे यासाठी जलसंधारण कामासाठी प्रयत्न केले जातील.

डॉ. संग्राम दुधाळ म्हणाले, की या डाळिंब संशोधन केंद्राच्या माध्यमातून शेतकऱ्यांना डाळिंब पिकावरील रोगाचे निर्मूलन करण्यासाठी व पिकाच्या चांगल्या उत्पादनासाठी वेगवेगळे उपक्रम वर्षभर राबवले जातात याचा लाभ अनेक शेतकऱ्यांना झाला. भविष्यात या भागातील शेतकऱ्याने देखील याचा लाभ घ्यावा. प्रास्ताविकात सारंग लिगाडे म्हणाले, की आम्ही पती पत्नी व्यवसायाने नोकरी करत असलो तरी गावाच्या विकासासाठी शासनाच्या विविध योजना प्रभावीपणे राबविण्यासाठी प्रयत्नशील राहणार आहे.

प्रचंड खपाचे एकमेव निःपक्ष व निर्भीड दैनिक
स्थापना १९३९
पुढारी
www.pudhari.com

भविष्यात कमी पाण्यावर शेतीतील उत्पन्न निघावे

डॉ. राजीव मराठे; भाळवणी येथे १५० शेतकऱ्यांना शेतीपूरक साहित्यांचे वाटप

मंगळवेढा : पुढारी वृत्तसेवा

दुष्काळी भागातील शेतकऱ्यांच्या प्रगतीसाठी डाळिंब संशोधन केंद्राच्या माध्यमातून वेगवेगळे उपक्रम राबवले जातात. या भागातील शेतीच्या पाण्याची गंभीर समस्या लक्षात घेता भविष्यात कमी पाण्यावर शेतीतील उत्पन्न निघावे. यासाठी जलसंधारण कामासाठी प्रयत्न केले जातील, असे प्रतिपादन डाळिंब संशोधन केंद्राचे डॉ. राजीव मराठे यांनी केले.

मंगळवेढा तालुक्यातील भाळवणी येथे सोलापूर येथील राष्ट्रीय डाळिंब संशोधन केंद्राच्या वतीने अनुसूचित जाती प्रवर्गातील शेतकऱ्यांसाठी १५० शेतकऱ्यांना शेतीपूरक साहित्यांचे वाटप करण्यात आले. यावेळी डाळिंब संशोधन केंद्राचे संचालक डॉ. राजीव मराठे, डॉ. संग्राम दुधाळ, डॉ. रुपा सौजन्य, सरपंच लक्ष्मण गायकवाड, उपसरपंच सुजाता लिगाडे, ग्रामसेवक सानिया तांबोळी, ग्रामपंचायत सदस्य शिवाजी दोडके, नामदेव चौगुले, सिताराम भगरे, तानाजी आवळेकर, सारंग लिगाडे, महादेव वरकुटे, उमेश शिंदे, श्रीराम पाटील, अण्णा पाटील, ज्ञानेश्वर पाटील, सुभाष गेजगे, बलभीम बेडगे, नामदेव दोडके, मच्छिंद्र बनसोडे, दगडू कैंगार, संजय कांबळे आदींसह शेतकरी उपस्थित होते. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन दत्तात्रय साखरे यांनी केले.

मंगळवेढा : मार्गदर्शन करताना डाळिंब संशोधन केंद्राचे डॉ. राजीव मराठे.

> डाळिंब संशोधन केंद्राच्या माध्यमातून शेतकऱ्यांना डाळिंब पिकावरील रोगाचे निर्मूलन करण्यासाठी व पिकाच्या चांगल्या उत्पादनासाठी वेगवेगळे उपक्रम वर्षभर राबवले जातात. याचा लाभ अनेक शेतकऱ्यांना झाला आहे. -डॉ. संग्राम दुधाळ

रानमसले गावातील शेतकऱ्यांना साहित्य वाटप

उत्तर सोलापूर : उत्तर तालुक्यातील रानमसले ग्रामपंचायत, कारंबा येथील ग्रामपंचायत सदस्य विनायक सुतार यांच्या विशेष प्रयत्नामुळे डाळिंब संशोधन केंद्रांच्या अनुसूचित जाती शेतकरी योजनेंतर्गत रानमसले गावातील मागासवर्गीय शेतकऱ्यांना साहित्याचे वाटप करण्यात आले. याप्रसंगी डाळिंब संशोधन केंद्राचे संचालक डॉ. राजीव मराठे, डॉ.संग्राम धुमाळ, डॉ. नम्रता गिरी, महादेव गोगाव, सचिन यादव, रानमसलेचे सरपंच मनोज क्षीरसागर, नान्नजचे उपसरपंच संभाजी दडे, कारंबा ग्रामपंचायत सदस्य विना... सुतार, ग्राम... सुहास भोस... फवारणीपंप, ...

उत्तर सोलापूर : शेतकऱ्यांना साहित्य वाटप करताना डॉ. राजीव मराठे, संग्राम धुमाळ, डॉ. नम्रता गिरी, महादेव गोगाव व इतर.

शेती प्रगतीसाठी तंत्रज्ञानाचा वापर करावा : डॉ. भोजे

सकाळ वृत्तसेवा

सोलापूर, ता. ४ : गावांचा कणा असलेल्या शेतीवर भारताची तब्बल ५० टक्के लोकसंख्या अवलंबून आहे. मात्र, मशागतीसाठी यंत्रांचा वापर नसल्याने जमिनीचे प्रतियुनिट उत्पादन कमी आहे. विज्ञान आणि तंत्रज्ञानाच्या वापर करून शेतीत प्रचंड प्रगती करावी लागेल, अशी अपेक्षा इंदिरा गांधी अणु संशोधन केंद्र (आयजीएआर) तमिळनाडूचे माजी संचालक तथा पद्मश्री डॉ. शिवराम भोजे यांनी व्यक्त केली.

सिंहगड एज्युकेशन येथील मल्टिमेगा कार्यक्रमात ते बोलत होते. अध्यक्षस्थानी पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापूर विद्यापीठाचे कुलगुरू डॉ. महानवर यांच्यासह सिंहगडचे कॅम्पस डायरेक्टर संजय नवले, सिंहगड सीओईटीचे संशोधक संचालक डॉ. एस. एच. पवार, प्राचार्य डॉ. शंकर नवले, डॉ. राजीव जोशी (कर्नाटक केंद्रीय विद्यापीठ, गुलबर्गा) एनआरसीपीचे संचालक डॉ. राजीव मराठे, एनआरसीपीचे वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. नीलेश गायकवाड यांची उपस्थिती होती. राजीव गांधी सायन्स अँड टेक्नॉलॉजी कौन्सिल प्रकल्पाचा प्रारंभ कॅम्पस डायरेक्टर संजय नवले यांच्या हस्ते करण्यात आला. प्रारंभी मान्यवरांच्या हस्ते स्मरणिकेचे प्रकाशन करण्यात आले. तत्पूर्वी 'सेव्ह एनर्जी, सेव्ह लाईफ' च्या घोषणा देत, विद्यार्थ्यांनी प्रभात फेरी काढली.

डॉ. भोजे यांनी शेतीत रसायनांच्या वापराबाबत चिंता व्यक्त करत यामुळे कर्करोगाच्या रुग्णांमध्ये लक्षणीय वाढ झाल्याचे सांगितले. शेतीत मार्केटिंग व्यवस्थापनासोबतच दुग्धव्यवसाय, कुक्कुटपालन, मध संकलन, मत्स्यपालन, ऊर्जा शेती, कुटीर उद्योग आणि सेवा याद्वारे आपण शेतीला पूरक बनवायला हवे, अशी अपेक्षा व्यक्त केली.

सोलापूर : मल्टिमेगा कार्यक्रमाच्या उद्घाटनाप्रसंगी उपस्थित पद्मश्री डॉ. शिवराम भोजे, कुलगुरू डॉ. प्रकाश महानवर, प्राचार्य शंकर नवले व अन्य.

संक्षिप्त

विकसित कृषी संकल्प अभियानाचे उद्घाटन

तरुण भारत (सोलापूर)

विज्ञान, तंत्रज्ञानाच्या वापराने शेतीत प्रगती करा

तरुण भारत (सोलापूर)

सोलापूरच्या ग्रामीण विकासावरील राष्ट्रीय परिषदेचा समारोप

तरुण भारत (सोलापूर)

सोलापुरात राष्ट्रीय स्तरावरील तीन दिवसीय मल्टी-मेगा इव्हेंट

सिंहगड महाविद्यालयात ३ मार्चला उद्घाटन | रेशीम उद्योगाची फिरती प्रयोगशाळा, विद्यार्थ्यांसाठी आकर्षण

सकाळ

मानव अन् मातीच्या आरोग्यासाठी सेंद्रिय शेतीकडे वळावे

डॉ. बसवराज रायगड; करकंब येथे विकसित कृषी संकल्प अभियानास प्रारंभ

करकंब (ता. पंढरपूर) : विकसित कृषी संकल्प अभियानाच्या उद्घाटन समारंभाप्रसंगी कृषी अधिकारी व शेतकरी.

पुरोगामी विचाराचे एकमत — रजनिश कसबे

विरवडे गावात विकसित कृषी संशोधन अभियान

तालुकाप्रतिनिधी : मोहोळ

विकसित कृषी संशोधन अभियान अंतर्गत मोहोळ तालुक्यातील विरवडे येथे सुरु आहे. अभियानात कृषी विज्ञान केंद्र मोहोळ तसेच राष्ट्रीय डाळींब संशोधन केंद्र सोलापूर यांनी संयुक्त भेट दिली.

डॉ.स्वाती कदम यांनी ऊस सुपर केन नर्सरी तंत्रज्ञानाने 2 महिने ऊस कालावधी कमी करता येतो असे सांगितले. डॉ.पिंकी रायगुंड शास्त्रज्ञ, सध्या परिस्थितीमध्ये येणाऱ्या तेल्या व मुळकुजव्या रोगाच्या व्यवस्थापना विषयी चर्चा केली. सध्या चालू असलेल्या कृषी संकल्प रथयात्रेच्या अनुषंगाने बीज प्रक्रिया व उगवण क्षमता चाचणी यासंदर्भात मार्गदर्शन ही करण्यात आले. कृषी विज्ञान केंद्र मोहोळ येथील कार्यक्रम समन्वयक डॉ.तानाजी वळकुंडे यांनी शेतकऱ्यांना जनावरांचे व्यवस्थापन व चाऱ्या पिकांचे नियोजन याविषयी मार्गदर्शन केले. राष्ट्रीय भरडधान्य संशोधन संस्था येथील वरिष्ठ शास्त्रज्ञ डॉ.बसवराज यांनी शेतकऱ्यांना सोलापूर भागामध्ये येणाऱ्या भरड धान्यांविषयी आणि ज्वारी पिकाचं अर्थकारण सांगितलं.

डॉ.विशाल वैरागर यांनी जलतारा व कृषी हवामान आधारित ॲप याविषयी मार्गदर्शन केले. कृषी अधिकारी विजय उघाटे यांनी भाऊसाहेब फुंडकर फळबाग योजना पिक विमा योजना याविषयी शेतकऱ्यांना अवगत केले.या कार्यक्रमासाठी कृषी विभागातील अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित होते. कार्यक्रमाच्या आयोजनासाठी कृषी विज्ञान केंद्र मोहोळ व विरवडे ग्रामस्थांनी विशेष प्रयत्न केले.

शेतकऱ्यांना मार्गदर्शन करताना शास्त्रज्ञ

तरुण भारत संवाद

डॉ. सोमनाथ पोखरे यांची डाळिंब उत्कृष्टता केंद्रसाठी क्लस्टर प्रमुख म्हणून निवड

सोलापूर : राष्ट्रीय डाळिंब संशोधन केंद्र, सोलापूर येथील वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सोमनाथ पोखरे यांची भारत सरकारच्या कृषी आणि शेतकरी कल्याण मंत्रालयाकडून एकीकृत बागवानी विकास मिशन (एम.आई.डी.एच.) अंतर्गत असणाऱ्या भारत व इस्राइल सहयोगी कृषी प्रकल्पामधील तीन राज्यामधील डाळिंब उत्कृष्टता केंद्रसाठी क्लस्टर प्रमुख म्हणून निवड झाली. ही डाळिंब उत्कृष्टता केंद्रे महाराष्ट्र (महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहुरी), फलोत्पादन विज्ञान विद्यापीठ बागलकोट, कर्नाटक व चिंडोल (बस्सी) जयपूर, राजस्थान येथे आहेत. या तिन्ही केंद्राचे समन्वय व वार्षिक कार्यक्रम आखणी तसेच या राज्यांमध्ये डाळिंब पिकासाठी व शेतकऱ्यांसाठी विशिष्ट प्रशिक्षण, कार्यशाळा आणि तांत्रिक कार्यक्रमांचे नेतृत्व आणि समन्वय साधण्याची जबाबदारी त्यांच्यावर आहे.

दैनिक नवज्योति — barmer-jaisalmer - 09 Jan 2025 - Page 3

देश की अनार क्रांति में बढ़ेगी बालोतरा क्षेत्र के किसानों की भागीदारी: प्रो. बलराजसिंह

अनार उत्पादन के लिए गोल्ड माइंस

सारोळेतील डाळींब बागेस कृषी शास्त्रज्ञांची भेट

विकसित कृषी संकल्प अभियान ८० गावांपर्यंत पोहोचले

✔ सोलापूर/प्रतिनिधी

अभियानात अनेक मान्यवरांचा सहभाग व मार्गदर्शन

सोलापूर : कृषी अभियानप्रसंगी कृषी विज्ञान केंद्राचे अधिकारी व ग्रामस्थ.

वेळील कृषी विज्ञान केंद्रातर्फे मंगळवेढा आणि बार्शी तालुक्यामध्ये विकसित कृषी संकल्प अभियान राबवले जात आहे. बार्शी तालुक्यामध्ये काळेगाव येथे दि. १० जून रोजी विकसित कृषी संकल्प अभियान राबविण्यात आले. हे अभियान आतापर्यंत ८० गावांपर्यंत पोहोचले असून यात अनेक मान्यवर सहभाग घेत आहेत.

यावेळी विभागीय कृषी संशोधन केंद्राचे सहयोगी संशोधन संचालक व प्रमुख शास्त्रज्ञ डॉ. जितीनकुमार रणसूर, उपविभागीय कृषी अधिकारी कुर्डूवाडी सोलापूरचे संजय वाकडे, कृषी विज्ञान केंद्र सोलापूरचे प्रमुख व वरिष्ठ शास्त्रज्ञ डॉ. लालासाहेब तांबडे, काळेगाव येथील ह.भ.प. उमेश देशमुख महाराज, राष्ट्रीय डाळिंब संशोधन केंद्राच्या शास्त्रज्ञ डॉ. नम्रता गिरी व डॉ. रुपा स्वजय, राष्ट्रीय कृषी संशोधन प्रकल्पाचे डॉ. आदिनाथ ताकटे, हणमंत पायतिडक आदी उपस्थित होते.

या कार्यक्रमांमध्ये सहयोगी संशोधन संचालक डॉ. जितीनकुमार रणसूर, डॉ. लालासाहेब तांबडे, कृषी अधिकारी संजय वाकडे, डॉ. नम्रता गिरी यांनी माहिती दिली. प्रगतशील शेतकरी व वारकरी संप्रदायाचे उमेश देशमुख, हणमंत पायतिडक यांनी अनुभव कथन केले.

सूत्रसंचालन विषय विशेषज्ञ समाधान जवळगे यांनी केले. आभार डॉ. प्रकाश कदम यांनी मानले. कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी काळेगाव ग्रामस्थ व कृषी विज्ञान केंद्र सोलापूरचे विषय विशेषज्ञ प्रदीपकुमार गोंजारी, डॉ. प्रकाश कदम, समाधान जवळगे, शिवाजी माने यांनी योगदान दिले.

मंगळवेढा तालुक्यामध्ये हे अभियान राबवण्यासाठी राष्ट्रीय डाळिंब संशोधन केंद्र सोलापूरचे प्रधान वैज्ञानिक डॉ. दिनेश बाबू व डॉ. पी जी पाटील, शिरवळ पशुवैद्यकीय महाविद्यालयाचे डॉ. विजयसिंह लोणकर, राष्ट्रीय कृषी संशोधन प्रकल्पाचे डॉ. प्रफुल्ल पवार हे मार्गदर्शन करत आहेत. हे अभियान यशस्वी करण्यासाठी कृषी विज्ञान केंद्राचे विषय विशेषज्ञ अमोल शास्त्री, विकास भिसे, अमिता शेळके, रोहित लंगोटे, गणेश कांबळे आदींनी परिश्रम घेतले.

अरुण भासल

खात्रीच्या रोपवाटिकेतूनच रोपांची खरेदी करणे उचित

सारोळे येथे शास्त्रज्ञांचा शेतकऱ्यांशी झाला सुसंवाद

डाळिंब पिकाविषयी सखोल मार्गदर्शन करताना शास्त्रज्ञांसह शेतकरी.

प्रतिनिधी |मोहोळ

मोहोळ तालुक्यातील सारोळे येथे महात्मा फुले कृषी विद्यापीठ, राहुरी अंतर्गत कार्यरत कृषी विज्ञान केंद्र व राष्ट्रीय डाळिंब संशोधन केंद्र, सोलापूर यांच्या संयुक्त विद्यमाने रविवार दि.२ मे रोजी सारोळे येथे शेतकऱ्यांशी प्रत्यक्ष संवाद साधण्यात आला. या सुसंवाद भेटीदरम्यान डाळिंब पिकावरील सध्याच्या समस्या समजून घेणेसाठी मार्गदर्शन करण्यात आले.

दरम्यान, सारोळे येथील कामराज चव्हाण यांच्या डाळिंब बागेची पाहणी शास्त्रज्ञ डॉ.पिंकी रायगुंड यांनी केली.डाळिंब पिकात सध्या मोठ्या प्रमाणावर दिसून येत आहे.यावर नियंत्रण मिळवण्यासाठी या रोगाचा प्रसार प्रामुख्याने रोगग्रस्त मातृ वृक्षापासून बनविलेल्या रोपाद्वारे होतो. त्यामुळे या रोगाचा प्रसार टाळण्यासाठी रोगमुक्त रोपांची लागवड करणे गरजेचे आहे.खात्रिशीर रोपवाटिकेतूनच रोपे खरेदी करून त्याची लागवड करावी.रोगट डागांवरून उडणाऱ्या पाण्याच्या थेंबातूनही या रोगाचा प्रसार होतो. त्यामुळे शक्यतो अनावश्यक रोगनाशक किटकनाशकाच्या किंवा मुख्य अन्नद्रव्याच्या फवारण्या टाळाव्यात. तेल्या, मुळकुजव्या रोगांच्या व्यवस्थापनावर मार्गदर्शन केले.

शुक्रवार, दि.०६ जून २०२५ पान २

जैविक फॉर्मुलेशनचा वापर करा व डाळिंबातील सूत्र सत्रकृमीचा नायनाट करा : डॉ.पिंकी रायगोंड

संग्रामनगर दि.०५ (प्रतिनिधी)- महाळुंग-श्रीपुर येथे महात्मा फुले कृषी विद्यापीठ अंतर्गत असणाऱ्या कृषी विज्ञान केंद्र तसेच राष्ट्रीय डाळींब संशोधन केंद्र सोलापूर व कृषी विभाग यांनी संयुक्त भेट देऊन डाळिंब क्षेत्राची पाहणी करण्यात आली त्यावेळी सूत्रकृमीचा अधिक प्रादुर्भाव हा झाडाच्या ड्रिपर खाली असलेल्या मुळावरील गाठींवरून स्पष्ट होतो.या किडीच्या नियंत्रणासाठी जैविक फॉर्मुलेशन उपयोगी ठरतात. उदा.पॅसिलोमायसेस किंवा सुडोमोनास किंवा ट्रायकोडर्मा स्पेसीज.शाश्वत सूत्रकृमी व्यवस्थापनाकरिता या जैविक घटकांचा वापर लागवडीपासून दर सहा महिन्यातून एकदा वापर करावा असे महाळुंग येथील शेतकऱ्यांच्या शेतावर पाहणी करतेवेळी डॉ.पिंकी रायगोंड यांनी माहिती दिली.

या कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक डॉ. तानाजी वळकुंडे यांनी केले तर डॉ.स्वाती कदम यांनी ऊस पाचट व्यवस्थापन संदर्भात उद्बोधित केले.डॉ.बसवराज रायगोंड शास्त्रज्ञ यांनी भरड धान्याची ओळख विषयी माहिती दिली तसेच इतर पीक संदर्भातील अडचणी जाणून घेतल्या त्या संदर्भात मार्गदर्शन केले डॉ.सुरज मिसाळ यांनी सध्या पिक परिस्थिती व त्यावरील उपाय योजना सांगितल्या तसेच सध्या चालू असलेल्या कृषी संकल्प रथयात्रेच्या अनुषंगाने डॉ.वैरागर यांनी जलतारा योजने अंतर्गत पाणी पुनर्भरण यासंदर्भात मार्गदर्शन केले.

यावेळी महाळुंग- श्रीपुर नगरपंचायतीचे नगराध्यक्ष व सर्व नगरसेवक उपस्थित होते.या कार्यक्रमासाठी कृषी विभागातील सहाय्यक कृषि अधिकारी भागवत शिंदे उपस्थित होते. कार्यक्रमाच्या आयोजनासाठी कृषी विज्ञान केंद्र मोहोळ व श्रीपुर महाळुंग ग्रामस्थांनी विशेष प्रयत्न केले.

कृषी संकल्प अभियान

माळीनगर येथे परिसंवाद संपन्न

संचार वृत्तसेवा

▶ **माळीनगर, दि.७-** खरीप हंगामपूर्व नियोजन प्रसारासाठी २९ मे ते १२ जून या दरम्यान सोलापूर जिल्ह्यातील सर्व तालुक्यांमध्ये शासनाच्यावतीने विकसित कृषी संकल्प अभियान राबवले जात आहे. या अंतर्गत ऊस पिकावर चर्चासत्र, प्रशिक्षण यावर महाराष्ट्र शासन, माळीनगर येथील सासवड माळी शुगर फॅक्टरी, आणि शुगरकेन सहकारी सोसायटी यांच्या संयुक्त विद्यमाने कारखान्याच्या गोल्डन ज्युबिली हॉलमध्ये परिसंवादाचे आयोजन केले होते.

अभियानाच्या नवव्या दिवशी माळीनगर येथे कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते. या कृषी संशोधन विस्ताराचे कार्य महात्मा फुले कृषी विद्यापीठ राहुरी अंतर्गत शासनाचे कृषी विज्ञान केंद्र मोहोळ, राष्ट्रीय डाळिंब संशोधन केंद्र सोलापूर यांच्या संयुक्त विद्यमाने केले जात आहे. यावेळी उपस्थित शेतकऱ्यांना ऊस लागवडीचे अर्थशास्त्र, बेणे निवडून प्रक्रिया व व्यवस्थापनावर डॉ. गणेश पवार यांनी मार्गदर्शन केले. तसेच केंद्रीय भरड धान्य संशोधन सोलापूरचे वरिष्ठ शास्त्रज्ञ डॉ. परशुराम पात्रोटी यांनी भरड धान्याच्या उत्पादनातून शाश्वत शेती व आरोग्याकडे वाटचाल करावी असे बोलताना आवाहन केले. डॉ. शिल्पा परशुराम यांनी, डाळिंब पिकातील तेल्या रोग व मर रोग यावर माहिती दिली.

या परिसंवादास तालुका सहायक कृषी अधिकारी सारिका एकतपुरे, भगवान शिंदे, इफको कंपनीचे धाईजे, माळशिरस आत्माचे रेश्मा क्षीरसागर, सूरज फुले, साखर कारखान्याचे संचालक गणेश इनामके, उपाध्यक्ष निखिल कुदळे, शुगरकेन सोसायटीचे उपाध्यक्ष कपिल भोंगळे, व्यवस्थापक अनिल गिरमे, कारखान्याचे कृषी अधिकारी विराज कुदळे उपस्थित होते.

विविध शेती पिके व फळबागांबाबत

वेणेगाव येथे शेतकऱ्यांना तज्ञांचे मार्गदर्शन

। वैराळे, प्रतिनिधी

विकसित कृषी संकल्प अभियान अंतर्गत कृषी विज्ञान केंद्र मोहोळ व कृषी विभागाचे वतीने माढा तालुक्यातील वेणेगाव येथे शेतकरी व शास्त्रज्ञ संवाद कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते.यामध्ये कृषी क्षेत्रातील तज्ञ असलेल्यांनी उपस्थित शेतकऱ्यांना विविध पिके,फळबागा यांची देखरेख तसेच भरघोस उत्पादन व त्याची काळजी कशी घ्यावी याविषयी मार्गदर्शन करण्यात आले.सहायक कृषी अधिकारी रत्नदीप उबाळे यांचे पुढाकाराने या कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते.

आधुनिक कृषि तंत्रज्ञान आणि खरीप हंगाम पूर्व नियोजन प्रसारासाठी डॉ. परशुराम पात्रोटी,डॉ. शिल्पा परशुराम, दिनेश क्षीरसागर,डॉ. पंकज महावी, काजल जाधव म्हात्रे,या शास्त्रज्ञांनी भरड धान्याचे पौष्टिक तत्त्वे तसेच त्यातील उद्योजकता,डाळिंब पिकातील तेल्या रोग व डाळिंबामध्ये येणारा मर रोग, कोणती काळजी घ्यावी आणि त्यासाठी वापरण्यात येणाऱ्या सर्व प्रतिबंधात्मक उपाय,फळे व भाजीपाला निर्जलीकरण उद्योग, कडधान्य प्रक्रिया, सेंद्रिय शेती प्रमाणीकरण,खरीप हंगामातील कीड व रोग व्यवस्थापन, ड्रोन आधारित फेरोमॅन ट्रॅप्स,,माती परीक्षण आधारित खत व्यवस्थापन याबद्दल उपस्थित शेतकऱ्यांना मृद विज्ञान व कृषि रसायन शास्त्र या विषयावर मार्गदर्शन करण्यात आले.यासह प्रधानमंत्री सूक्ष्म अन्नप्रक्रिया उद्योग योजना याविषयी सविस्तर माहिती दिली. यावेळी जयवंत नलावडे, सचिन डोके राहुल मोरे,ठाकरे उपस्थित होते, यावेळी परिसरातील शेतकरी बंधू भगिनी मोठ्या संख्येने उपस्थित होते. सूत्रसंचालन रत्नदीप उबाळे यांनी केले.

सोलापूर

तरुण भारत

epaper.dainiktarunbharat.com
09 Jun 2025 - Page 10

'एआय' तंत्राने पीक उत्पादनात आमुलाग्र बदल शक्य

डॉ. लालासाहेब तांबडे यांचे प्रतिपादन

कृषी, राजकारण व सामाजिक घडामोडीचा वेध घेणारे..

कृषी सोबती

|पुणे ,बीड| दि. ३० मे २०२५

विकसित कृषि संकल्प अभियानाची कृषी विज्ञान केंद्र , सगरोळीतुन उत्साहात सुरुवात

नांदेड,(प्रतिनिधी): कृषी विज्ञान केंद्र (KVK) सगरोळी तर्फे विकसित कृषी संकल्प अभियानाची आज उत्साहात सुरुवात झाली. या अभियानाचा उद्देश शेतकऱ्यांना आधुनिक कृषी तंत्रज्ञान आणि वैज्ञानिक संशोधन यांची माहिती देणे आहे.

अभियानाचा व्यापक विस्तार

या अभियानाद्वारे शेतीतील सुधारित तंत्रज्ञान, उत्पादन खर्च कमी करण्याचे उपाय, सेंद्रिय शेती आणि पिकांची विविधता वाढवणे यावर भर दिला जात आहे. भारतीय कृषी संशोधन परिषद (ICAR)च्या मार्गदर्शनाखाली हे अभियान ७२३ जिल्ह्यांमध्ये राबवले जात असून ७३१ कृषी विज्ञान केंद्रे आणि ११३ संशोधन संस्थांचे शास्त्रज्ञ यात सक्रिय सहभाग घेत आहेत.

• केव्हीके सगरोळीत विशेष कार्यक्रम

केव्हीके सगरोळी तर्फे आयोजित शिपाला, सगरोळी, बोळेगाव, आदमपूर, कारगाव, अटकळी या गावांतील कार्यक्रमात शेतकऱ्यांना भेट मार्गदर्शन करण्यात आले. प्रगत तंत्रज्ञान, मृदा आरोग्य व्यवस्थापन, जलसंधारण, विविध शासकीय योजना आणि बियाण्यांची उगवणक्षमता यासंदर्भात तज्ञांनी माहिती दिली.

तज्ञांचे मार्गदर्शन

या कार्यक्रमात राष्ट्रीय डाळिंब संशोधन केंद्राचे प्रमुख शास्त्रज्ञ डॉ. श्रीगुरे, श्री. दगाले, कृषी विज्ञान केंद्राच्या प्रमुख डॉ. माधुरी रेवनवार, डॉ. प्रवीण चव्हाण, डॉ. संतोष चव्हाण, डॉ. कृष्णा अंभुरे, डॉ. निहाल मुल्ला, भारतीय ऊस संशोधन संस्था प्रवरानगरचे शास्त्रज्ञ डॉ. योगेश थोरात, डॉ. बोरसे आणि तालुका कृषी अधिकारी, बिलोली श्री. तिडके यांनी मार्गदर्शन केले.

उद्घाटन सोहळा आणि पुढील दिशा

या अभियानाच्या सगरोळी येथील उद्घाटन प्रसंगी श्री. सुनील देशमुख, विश्वस्त, संस्कृति संवर्धन मंडळ उपस्थित होते. शेतकऱ्यांनी या अभियानाचा जास्तीत जास्त लाभ घ्यावा, असे आवाहन आयोजकांनी केले.

शेतकऱ्यांसाठी सुवर्णसंधी

या अभियानाद्वारे शेतकऱ्यांना आधुनिक तंत्रज्ञानाची माहिती मिळणार असून, उत्पादन खर्च कमी करण्याच्या उपाययोजना, सेंद्रिय शेतीचे फायदे आणि विविध सरकारी योजनांचा लाभ घेता येईल.

जनसामान्य माणसाचे हक्काचे व्यासपीठ

दैनिक लोकनेता

website : epaper.lokneta.in

हवामान अनुकूल शेतीतून उत्पादनवाढीचा मार्ग विकसित कृषि संकल्प अभियानाचा सहावा दिवस संपन्न

पुण्य नगरी

भाळवणी येथे १५० शेतकऱ्यांना शेतीपूरक साहित्याचे वाटप

मंगळवेढा / तालुका प्रतिनिधी

भाळवणी (ता.मंगळवेढा) येथे सोलापूर येथील राष्ट्रीय डाळिंब संशोधन केंद्राच्या वतीने अनुसूचित जाती प्रवर्गातील शेतकऱ्यांसाठी १५० शेतकऱ्यांना प्रत्येकी साडेअठ्ठावीस हजार रुपये किमतीचे शेतीपूरक साहित्याचे किट वाटप करण्यात आले.

यावेळी बोलताना डाळिंब संशोधन केंद्राचे डॉ. राजीव मराठे म्हणाले, डाळिंब संशोधन केंद्राच्या माध्यमातून शेतकऱ्यांना डाळिंब पिकाचे संवर्धन करण्यासाठी विविध प्रकारच्या औषधाचा व पिकावर पडलेल्या रोगाचे निर्मूलन करण्यासाठी दर्जेदार साहित्याचा पुरवठा करण्यावर भर दिला जातो. दुष्काळी भागातील शेतकऱ्यांच्या प्रगतीसाठी डाळिंब संशोधन केंद्राच्या माध्यमातून वेगवेगळे उपक्रम राबवले जातात त्याचा दुष्काळी भागातील शेतकऱ्यांनी लाभ घ्यावा. भविष्यात कमी पाण्यावर शेतीतील उत्पन्न निघावे यासाठी जलसंधारण कामासाठी प्रयत्न केले जातील.

डॉ.संग्राम धुमाळ म्हणाले, डाळिंब संशोधन केंद्राच्या माध्यमातून शेतकऱ्यांना डाळिंब पिकावरील रोगाचे निर्मूलन करण्यासाठी व पिकाच्या चांगल्या उत्पादनासाठी वेगवेगळे उपक्रम वर्षभर राबवले जातात याचा लाभ अनेक शेतकऱ्यांना झाला. प्रास्ताविकात सारंग लिगाडे म्हणाले, आम्ही पती-पत्नी व्यवसायाने नोकरी करत असलो तरी गावाच्या विकासासाठी शासनाच्या विविध योजना प्रभावीपणे राबविण्यासाठी प्रयत्नशील राहणार आहे. यावेळी ग्रामसेवक सानिया तांबोळी, सुभाष गेजगे यांनी मनोगत व्यक्त केले.

यावेळी डाळिंब संशोधन केंद्राचे संचालक डॉ.राजीव मराठे, डॉ. संग्राम धुमाळ, डॉ.रूपा सौजन्य, सरपंच लक्ष्मण गायकवाड उपसरपंच सुजाता लिगाडे, शिवाजी घोडके, नामदेव चौगुले, सिताराम भगरे, तानाजी आवळेकर, सारंग लिगाडे, महादेव वरकुटे, उमेश शिंदे, श्रीराम पाटील, अण्णा पाटील, ज्ञानेश्वर पाटील, सुभाष गेजगे, बलभीम खेडगे, नामदेव घोडके, मच्छिंद्र बनसोडे, दगडू केंगार, संजय कांबळे आदी उपस्थित होते. सूत्रसंचालन दत्तात्रय साखरे यांनी केले.

निर्मित एवं प्रकाशन

राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र

(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

केगांव, सोलापुर - ४१३ २२५, महाराष्ट्र (भारत)

ईमेल आईडी: nrcpomegranate@gmail.com

https://www.nrcpomegranat

दूरभाष : ०२१७-२३५४३३०,२३५००७४